Digitized by eGangotri.

'कुर्आन' में हिन्दी

कु
07
33

श्री चन्द्रबली पांडे

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

'कुर्आन' में हिन्दी

लेखक

श्री चन्द्रबली पांडे एम० ए०

प्रकाशक

सरस्वती मन्दिर

जतनबर, बनारस

२००२ वि०]

[मूल्य ।।=)

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

मुद्रक—शंकरप्रसाद,
खगेश प्रेस, ढुंढिराज, काशी ।

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ
१. 'क़ुर्आन' में हिन्दी शब्द	१
२. 'क़ुर्आन' में दहरविद्या	१०
३. 'अर्श' और 'आसन्दी'	३१
४. उपनिषद् और क़ुर्आन	३९
५. हदीस में हिन्दी	५१

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

निवेदन

कुर्आन में हिन्दी की रचना जिस दृष्टि से हुई है वह स्पष्ट और प्रकट है, देश की जो दशा है वह भी किसी से छिपी नहीं है। धर्म की आड़ में जो उपद्रव हो रहा है वह और भी घातक हो गया है। ऐसी स्थिति में धर्म के मूल ग्रन्थों में कितना मेल है और वस्तुतः एक धर्म दूसरे का कहाँ तक विरोधी है आदि प्रश्नों को जान लेना कितना आवश्यक है इसे भी कौन नहीं जानता। पर यदि हम नहीं जानते तो यही कि अरबी रसूल के उदय के समय हमारा उनका क्या नाता था। इसी नाता को खोलने का इस छोटी सी पुस्तक में अल्प प्रयत्न किया गया है जो अपर्याप्त होने पर भी मार्गनिर्देश के लिये पर्याप्त है।

१३–१०–४५ — चन्द्रबली पांडे

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

'कुर्आन' में हिन्दी शब्द

मुस्लिम साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी का उल्लास है—"हम हिन्दियों को भी फख़ है कि हमारे देश के भी चन्द लफ्ज ऐसे खुशनसीब हैं, जो इस पाक और मुकद्दस किताब में जगह पा सकें। पहले उल्मा ने जिन अल्फाज का हिन्दी होना जाहिर किया था, वह तो लगो व बेबुनियाद थे, मसलन् 'इबलई' की निस्बत यह कहना कि हिन्दी में उसके माने 'पीने' के हैं या 'तूबा' को हिन्दी कहना, जैसा कि सईद बिन जबीर से रवायत है, बेबुनियाद है। मगर इसमें शक नहीं कि जन्नत की तारीफ में इस जन्नतनिशाँ मुल्क की तीन खुशबूओं का जिक्र जरूर है, याने मुस्क (मुश्क), जञ्ज-बील (सोंठ या अदरक) और काफ़ूर (कपूर)" अरब व हिन्द के तालुकात, हिन्दुस्तानी एकाडमी, प्रयाग, सन् १९३० ई० पृ० ७१—२) सचमुच यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे देश के तीन शब्द 'कुर्आन पाक' में भी जा बिराजे हैं और सो भी ठीक जन्नत में। इन में से 'मुष्क' और 'कर्पूर' के विषय में तो कुछ कहना ही नहीं। कोई भी व्यक्ति उन्हें 'मुस्क' और 'काफ़ूर' में पकड़ सकता है। हाँ, यदि किसी को भ्रम हो सकता है, तो 'जञ्जबील' के विषय में, कारण कि 'सोंठ या अदरक' से उसकी उत्पत्ति हो नहीं सकती। किन्तु इसके लिए भी हमें उक्त सैयद साहब का कृतज्ञ होना चाहिए कि उन्होंने कृपाकर अपनी समझ में इसका भी हिन्दी रूप दे दिया है, जो है-'जरञ्जबीरा'

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

(वही, पृ० ६६)। 'जरञ्जवीरा' के विषय में कुछ न कह हमें यहाँ इतना ही कहना है कि वास्तव में इस का शुद्ध संस्कृत है 'शृङ्गवेर'। भगवान् चरक का कहना है—

"पिप्पली पिप्पलीमूलं चित्रव्ये हस्तिपिप्पली।
शृङ्गवेरं यवक्षारं तैः सिद्धं वा पिबेद्घृतम्" ॥ ७५ ॥
(चिकित्सास्थानम् अर्शचिकित्सा)

ध्यान देने की बात है कि यही 'पिप्पली' अरबी में जाकर 'फिलफिल' हो गयी है और यही 'शृङ्गवेर' 'जञ्जबील'। इन में से 'जञ्जबील' को तो यहाँ तक महत्त्व मिला कि जन्नत में उसका सोता ही मान लिया गया है। कहते हैं—"जन्नतियों को (ऐसे शरबत के) प्याले पिलाये जायेंगे, जिनमें मिलोनी सोंठ (के पानी) की भी होगी। (सोंठ का) जन्नत में एक सोता है, जिसका नाम सलसबील है।" (सूरत दहर ७६, आयत १७-१८)। 'सलसबील' और जञ्जबील' की तुक भी कैसी सटीक बैठी है? 'काफ़ूर' भी इसी सूरत की आयत ५ में आ चुका है, वहाँ भी 'काफ़ूर की मिलौनी' का ही उल्लेख है। रही 'मुश्क' की बात, सो इस के लिए 'कुआन' की यह आयत देखिए—"उन्हें अतिपवित्र बिना मिलावट की मुहर की हुई मदिरा पीने को मिलेगी कि जिस के (हर घूंट के) गले से उतरते ही कस्तूरी की सुगन्ध आयेगी" (सू० ततफीफ ८३, आयत २५-२६)। ख्वाजा हसन निजामी का ही अनुवाद ऊपर दिया गया है, जिसमें मुश्क को भी पेय का ही अङ्ग बनाया गया है। परन्तु दूसरे टीकाकारों ने 'जिसकी मुहर मुश्क की होगी' ऐसा भी अर्थ माना है। इस का सीधा अर्थ चाहे जो हो, पर है स्वर्गीय पदार्थ भारत का 'मुष्क' ही, जो ईरान में जाकर 'मुश्क' हो गया और 'कुआन' अथवा अल्लाह के कलाम में 'मिस्क'।

'तूबा' के मूल के बारे में सैयद साहब ने कुछ नहीं कहा, पर इतना

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

अवश्य बताया है कि उसे हिन्दी मानना 'बेबुनियाद' है। उस की 'बुनियाद' कहाँ है इस पर विचार करने का वह समय न था। अतः हम नहीं कह सकते कि उक्त सैयद साहब का मत इस के मूल के बारे में क्या है, परन्तु एक दूसरे सज्जन ने 'कुर्आन' के विदेशी शब्दों पर विचार करते समय इसे सुरयानी भाषा का शब्द माना है। शब्द चाहे जिस भाषा का हो, पर मेल इसका श्रुति से अवश्य है। 'छान्दोग्योपनिषद' में जो 'अश्वत्थ: सोमसवन:' है, वही इस पाक कलाम में 'तूबा लहुम'। 'तूबा' के प्रसङ्ग में हमें भूलना न होगा कि 'कुर्आन मजीद' में वह जिस प्रसङ्ग में आया है, वह 'छान्दोग्य' के सर्वथा अनुकूल है और आगे चलकर 'हदीस' के आधार पर 'तूबा' माना भी गया है जन्नत का कल्पवृक्ष ही। 'कुर्आन' के टीकाकारों में से एक टीकाकार ऐसे भी हैं, जो 'कुर्आन' की इस आयत (१३-२९) की टीका में 'तूबा' को तूबा ही रहने देते हैं और उस पर टिप्पणी भी इसी पक्ष की देते हैं। उन का कहना है—"इब्न अबी हातिम ने इब्न सैरीन से रवायत की है कि तूबा बिहिश्त में एक दरख्त है, जिसकी जड़ अली इब्न अबी तालिब के घर में है और जन्नत में कोई घर ऐसा नहीं, जिस में उस की शाखों में से एक शाख न हो। ('कलाम' आशह)। मौलाना फरमान अली का सम्प्रदाय 'तूबा' को क्या समझता है, यह तो प्रकट हो गया। उन का इस आयत का अर्थ है "जिन लोगों ने ईमान कबूल किया और अच्छे-अच्छे काम किये, उन के वास्ते (बिहिश्त में) तूबा और खुशहाली और अच्छाई अँजाम है" (सूरत खूद)। उधर हम देखते हैं कि इसी आयत की टीका में एक दूसरे महानुभाव लिखते हैं—"मुतरज्जिम मुहक्किक ने 'तूबा' के लुगवी माने लिये हैं, उसी के अन्दर जन्नत का वह दरख्त भी आ गया है, जिसे 'हदीस' सही में 'तूबा' के नाम से मौसूम फरमाया है" (कुर्आन मजीद, मदीना बर्की प्रेस, बिजनौर, सन् १३५२ ई०। अच्छा तो उक्त मुहक्किक शेखुल्हिन्द मौलाना महमूद हसन देवबन्दी का उक्त अनुवाद है "जो लोग ईमान

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

लाये और काम किये, अच्छे खुशहाली हैं, उन के वास्ते और अच्छा ठिकाना।' (वही, सूरत रअद १३ आयत २६)। इसी प्रकार 'अश्वत्थ: सोमसवन:' की भी व्याख्या है।

"अश्वत्थः—'श्वयति गच्छति वर्द्धते च श्वत्थः।

न श्वत्थः अश्वत्थः एकरस इति यावत्"

"जो गति और वृद्धि से रहित हो अर्थात् जो सदा एकरस हो, उसे अश्वत्थ कहते हैं। सोमसवन—सोम-अमृत, सवन उत्पन्न होता है, जिस से, उसे सोमसवन कहते हैं"। (छान्दोग्य ८. ५. ३ पर श्रीशिव-शङ्कर शर्मा का भाष्य। वैदिकयन्त्रालय अजमेर, सं १९६२ वि०) 'अश्वत्थ' और तूबा के इस प्रकरण में हम ने प्रत्यक्ष देख लिया कि उन में जो समता है, वह यों ही टाल देने की वस्तु नहीं, उस को स्पष्ट करने के लिए उन की स्थिति पर विचार करना ही होगा और ध्यान देना होगा 'तूबा' के मूलस्रोत पर।

'काफूर', 'जञ्जबील', 'मिस्क' और 'तूबा' की भाँति ही कुछ अन्य शब्द भी ऐसे सौभाग्यशाली हैं, जो अरबी न होते हुए भी 'जन्नत' में जा विराजे हैं। कहना न होगा कि इन्हीं शब्दों में एक शब्द 'नमारिक' भी है, जिस का अर्थ किया गया है 'गावतकिया'। 'सूरत गाशियह' की आयत पन्द्रह है "और बराबर लगे हुए गावतकिये"। (८८, १५)। श्री जेफ्फरी महोदय ने 'नमारिक' को ईरानी 'नम्रा' का रूपान्तर माना है और साथ ही संस्कृत 'नमरा' का भी सङ्केत किया है। वास्तव में यह 'नमारिक' 'नम्रा' का रूपान्तर है अथवा 'नर्म' वा 'नर्मा' का, इस से कोई विवाद नहीं। यहाँ तो बस इतना ही होना पर्याप्त है कि यह 'जन्नत' का 'नमारिक' भी हिन्दी है। ईरानी भी है, तो रहे, पर उसे हिन्दी होने से रोक कौन सकता है?

'जन्नत' में इनके अतिरिक्त कुछ और भी आप को यहाँ का दिखाई देगा। कहते हैं ("वहाँ वह) महीन और मोटे (रेशमी) वस्त्र पहि-

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

नेंगे (और) आमने-सामने बैठेंगे, हाँ ऐसा ही होगा।" (सू० दुखान-४४, आ० ५३)। यहाँ 'मोटा' जिस शब्द का अर्थ दिया गया है, वह है, 'इस्तब्रक'। 'इस्तब्रक' का मूल है क्या ? वही जेफ्फरी साहब यहाँ भी 'स्थविर' का सङ्केत करते हैं, पर मानते हैं इस का पल्हवी रूप का रूपान्तर। जो हो, जैसे हो, पर है तो यह भी हमारे 'स्थविर' का रूपान्तर, हमारे लिए इतना ही बहुत है। इस के अन्यत्र प्रयोगों के लिए देखिए १८-३१,५५-५४ और ७६-२१; और कृपया भूल न जाइये कि यह इसलामी स्वर्ग का शब्द है आप का चिरपरिचित 'स्थविर'।

इसी स्वर्ग के प्रसङ्ग में'कुरान शरीफ' में आपको एक और भी शब्द दिखाई देगा, जिस को आप पढ़ेंगे 'अबारीक'। अच्छा, तो यह 'अबारीक' है क्या ? 'इब्रीक' का बहुवचन, परन्तु 'इब्रीक' से आप का सम्बन्ध ? जो लोग इसे स्वयं अरबी का शब्द मानते हैं, उन से कोई विवाद नहीं, पर जो इसे किसी अन्य शब्द का अरबी रूप समझते हैं, उन से हमारा नम्र निवेदन है कि वे कृपाकर एक बार इसे 'अपरेक' के साथ भी देख लें। श्री जेफ्फरी महोदय ने 'अप' का उल्लेख किया है। 'रेक' का विधान और कर दिया गया है, जिस से सिद्ध हो जाय कि यह द्रव्य को रिक्त करनेवाला पात्र था कुछ और नहीं, इससे शराब ढालने में सुविधा थी। तो क्या इस के हिन्दी होने में कुछ सन्देह है ?

'जन्नत' में जन्नती को बैठने को जो बिछौना मिलेगा, वह होगा 'अबकरी हिसाँ' ? 'हिसाँ' की रम्यता तो 'हसीन' में है ही, पर यह 'अबकरी' क्या है ? सो इस की विचित्रता को कुछ न पूछिए। निदान इस को भी लोगों ने ईरानी 'आबकार' का ही रूप माना किंवा मानसा लिया। इस 'आवकार'को संस्कृत 'आभाकार'के साथ देखा तो गया पर सच पूछिए, तो इस से 'अबकरी' की विधि नहीं बैठी, हमारी समझ में इस का मूल रूप है 'अभ्रकरी'। हम इस 'अभ्रकरी' को उसी ढङ्ग का नाम समझते हैं, जिस ढङ्ग का धूपछाँह' वा 'चीरोदक' आदि। विविधवर्णता ही 'कुरान' को भी इष्ट दिखाई देती है।

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

हाँ, 'हूर' की भाँति ही 'खियाम' शब्द भी भाषा की दृष्टि से विचारणीय है। 'उमर खय्याम' के कारण यद्यपि यह शब्द अत्यन्त प्रचलित हो गया है, तथापि इसके मूल की जिज्ञासा अभी शान्त नहीं हुई है। हमें तो यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं होता कि यह 'खेमा' भी संस्कृत 'क्षेम' का ही रूपान्तर है। जो हो, इतना तो निर्विवाद है कि 'जन्नत' के प्रकरण में जितने हिन्दी शब्द 'कुरान' में आये हैं, उतने किसी भी अन्य प्रसङ्ग में नहीं ; अतः इस प्रसङ्ग को यहीं छोड़ कुछ अन्य शब्दों पर भी विचार कर लेना चाहिए और देखना यह चाहिए कि 'कुरान मजीद' में हिन्दी शब्दों का स्थान क्या है। 'कुरान के विदेशी शब्द' में डाक्टर जेफ्फरी ने जिन संस्कृत शब्दों का उल्लेख किया है, उनमें से अनेक का सङ्केत भर किया गया है। तो भी जानकारी के लिए उन को जान लेना अच्छा ही होगा। अच्छा, तो उन का क्रम है—अथर्वन्, अप, आभा, कर्पूर, कार, कलम, कीश, गञ्ज, गञ्जवर, दीनार, नमरा, परशु, पील, मुषक, रोच, रोम, रोद, विनाश, वृन्दा, शृङ्गवेर, स्थविर, स्वर, सूक्त और सुभन्। इन में से कुछ शब्दों पर विचार पहले हो चुका है और कुछ पर विचार और कर लिया जाता है, शेष पर विचार करने की आवश्यकता नहीं। कारण स्वयं जेफ्फरी महोदय उनको महत्त्व नहीं देते। और देते भी कैसे ? इस दिशा में तो अभी काम ही क्या हुआ है ? भाषा विज्ञान के प्रताप से जो इतना हो गया, वही बहुत है। संस्कृत शब्दों की सूची में 'कलम' शब्द को देखकर बहुतों को आश्चर्य होगा। 'कलम' और 'संस्कृत' कैसी अनहोनी बात ठहरी ! हो, परन्तु इतना तो जान ही लें कि आज बहुत से भाषाविज्ञानी 'कलम' को अरबी का शुद्ध रूप नहीं समझते, प्रत्युत उसे यूनानी शब्द 'कलमस' का अरबी रूप मानते हैं और संस्कृत 'कलम' को भी मूलतः यूनानी ही मानते हैं किन्तु जब हम देखते हैं कि 'कलम' शब्द 'धान' विशेष के पहले से ही प्रयुक्त है, तब उसे यूनानी का रूप समझना ठीक नहीं जंचता। कलम जिस

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

'नरसल' से बनती है, वह भी कलवर्ग में आ जाता है और यूनानी भाषा में उनका प्रयोग भी दोनों के लिए होता है। अतः कोई कारण नहीं कि हम 'कलम' को संस्कृत क्यों न मानें और क्यों उसे यूनान वा अरब का प्रसाद समझें ? रही 'कुर्आन' में उसके प्रयोग की कथा, सो इसके बारे में इतना और जान लें कि "और (उसके ज्ञान और हिकमत की शान यह है कि) समस्त पृथ्वी में जितने वृक्ष हैं, यदि (उन सब की) कलमें (बनी हुई) हों और समुद्र (का पानी) स्याही (हो और) उस (समुद्र) के (समाप्त हो जाने के) पश्चात् (उस जैसे) सात समुद्र (और) उसकी सहायता करें (और फिर उन कलमों और दावातों से उसके ज्ञान तथा हिकमत के शब्द लिखे जावें, तो भी यह लेखन-कला के सब साधन समाप्त हो जावें परन्तु) अल्लाह (के ज्ञान तथा हिकमत) की बातें समाप्त न हों।" (सूरत लुक्मान ३१, आयत २७) इस आयत में जो 'सात समुद्र' का उल्लेख हुआ है, उसका कारण क्या है यह हम नहीं कह सकते, पर इतना तो आप भी मानते ही होंगे कि 'सात समुद्र' से आप का विशेष नाता है। जो हो, दूसरे स्थल पर भी 'कुर्आन' में कहा गया है—"(हे रसूल !) तुम (संसार के मनुष्यों से) कह दो कि (यदि इस सर्वदा के सुख चैन को प्राप्त करना चाहते हों, तो चैन व मोक्ष देनेवाले खुदा की एकता को मानो और उन्हें बताओ कि हे मनुष्यो !) यदि मेरे पालनकर्त्ता के कलमात अर्थात् गुणों के लिखने) के लिए समुद्र (का पानी) रोशनाई बन जावे, तो मेरे पालनकर्त्ता के कलमात समाप्त होने (और लिखने के घेरे में आने) से प्रथम समुद्र (का समस्त पानी) समाप्त हो जाय। यद्यपि हम उसके समान (और एक समुद्र उसकी) सहायता के लिए ले आवें।" (सू० कहफ १८, आयत १०६)। 'कुर्आन की इस स्तुति में 'सात' का उल्लेख नहीं और न 'कलम' का, किन्तु भाव वही है। इस को और भी स्पष्ट समझना चाहते हों, तो कृपया 'महिम्नस्तोत्र' का यह श्लोक पढ़ें—

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

"असितगिरिसमं स्यात्कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखालेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ॥ ३२ ॥"

श्लोक में लेखन-कला की पूर्णता आप ही कुछ कह रही है। 'कुर्आन' में लेखक और पत्र का निर्देश नहीं। 'कागद' की जगह 'कुर्आन' में किरतास (६. ६, १) आया है, जो आज भी यूनानी शब्द समझा जाता है। बात यह है कि स्वयं मुहम्मद साहब के समय में अरब में 'कागद' का पता न था। समरकन्द की विजय (सन् ७५१ ई०) के बाद ही अरब को 'कागद' का बोध हुआ और फलतः आरम्भ में अरबी में वह लिखा भी गया 'कागद ही 'कागज' नहीं। बात जो हो, पर संस्कृत के 'कागज-कलम' में से 'कलम' है कुर्आन पाक में विराजमान। अरबी का 'कागद कलम' संस्कृत के 'कागज-कलम' के कितना निकट है इस के कहने की आवश्यकता नहीं। आवश्यकता है 'श्रुति' और 'कुर्आन' के सम्बन्ध पर विचार करने तथा 'कुर्आन' के हिन्दी भावों और विचारों को समझ लेने की।

कलम जैसी ही दशा कुछ 'फील' शब्द की भी है। लोग उसे ईरानी मानने पर आरूढ़ हैं। 'कुर्आन शरीफ' में इसका बड़ा महत्त्व है। इसलाम के इतिहास में ध्यान देने की बात यह है कि जिस वर्ष मक्का पर हाथी का आक्रमण हुआ, उसी वर्ष अरब में मुहम्मद साहब का अवतार। इसी से इस को 'हाथी का वर्ष' कहते भी हैं। 'कुर्आनशरीफ' में आया है—"(हे पैगम्बर !) तुम्हें क्या ज्ञात नहीं है कि तुम्हारे पालनहारे ने अस्हाव-फील (हाथीवालों) के साथ क्या किया था ? क्या उस ने उन के (समस्त) प्रयत्नों को मटियामेट नहीं कर दिया और उन पर झुण्ड के झुण्ड पक्षी भेजे. जो उन पर पथरीली कङ्करियाँ फेंकते थे। सो (इस प्रकार अल्लाह ने) उन्हें ऐसा कर दिया, जैसे खाया

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

हुआ भुस (होता है)" (सूरतफील–१०५)। 'फील' की इस स्थिति को देखते हुए इस पर विशेष विचार करने की आवश्यकता इसलिए पड़ी कि 'फील' को लोग ईरानी शब्द मानते हैं और संस्कृत 'पीलु' को उसी का प्रसाद। परन्तु 'कुर्आन' का प्रकरण इसके प्रतिकूल है। यह आक्रमण ईरान का नहीं, अबीसीनिया का था और इसमें पहले-पहल युद्ध में हाथी का उपयोग हुआ था, ईरान में हाथी का अभाव था। रोम के साथ संग्राम में ईरानी हाथी का प्रयोग जब-तब करते थे किन्तु अपने नहीं भारतीय हाथी का। अतः पीलु' शब्द को ईरानी मानने का कोई कारण नहीं। इसे तो देश्य मानना ही अधिक सङ्गत जान पड़ता है, क्योंकि इस देश में सदा से हाथी पाये जाते हैं। अबीसीनिया और हिन्द के विवाद में पड़ने का कोई कारण नहीं। कोई इसे अबीसीनिया का शब्द नहीं समझता। 'कुर्आन' में यह शब्द किधर से पहुंचा. इस पर विवाद हो सकता है, सम्भव है यह शब्द हिन्दी ही हो, 'पीलपाँव' नामक रोग में यह आजतक बना है। इसे हम 'फीलपाँव' का अपभ्रंश नहीं कह सकते। नहीं, फील ही 'पीलु' का रूपान्तर किंवा अरबी रूप है।

'झुण्ड के झुण्ड' से एक दूसरा शब्द सामने आ गया। 'जुन्द' का प्रयोग कई रूपों में कई बार 'कुर्आन' में हुआ है। श्री जेफरी महोदय ने इसे ईरानी 'गुन्द' कहा है और संस्कृत 'वृन्द' के साथ इसका साम्य भी दिखाया है। परन्तु ठेठ 'झुण्ड' से इसका इतना लगाव दिखाई देता है कि अन्यथा कुछ कहते नहीं बनता। 'झण्डा' 'झण्डी' के साथ ही इस झुण्ड को भी क्यों न देखा जाय और क्यों न 'जुन्द' को इसी झुण्ड का फल समझा जाय? 'जुन्द' की बात तो टीका के 'झुण्ड' को देखकर निकल आयी, नहीं तो कहा यह जा रहा था कि 'सूरत कील' में जो 'सिञ्जील' शब्द आया है, वह भी कुछ इधर ही सङ्केत कर जाता है। 'अमरकोष' में कहा है—

"सर्जिकासारः कापोतः सुखवर्च्चकः।" (२, १०९)

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

जिसका अर्थ है कि 'सर्जिकाक्षार', 'कापोत' और सुखवर्चक पर्याय हैं। 'सर्जिका' का 'सज्जी' रूप तो आज भी इस देश में प्रचलित है। 'सज्जी' का 'सिज्जील' से जो सम्बन्ध है, वह भी किसी की आँख से ओझल नहीं। रही 'कापोत' और 'सुखवर्चक' की वार्ता। सो संयोग की ही बात समझिए कि इस सूरत में घट रही है। 'कापोत' का 'कपोत' से सम्बन्ध है तो 'सुखवर्चक' का 'सुख से लगाव। उधर इस सूरत में 'अबाबील' है तो उसके द्वारा मक्का का क्षेम भी। बस, इसके विषय में हम इससे अधिक और कहना नहीं चाहते। हमें तो यहाँ बस इतना भर दिखाना था कि 'कुरआन' में हिन्दी शब्दों की खोज कहाँतक की जा सकती है और उस खोज से क्या कुछ निकाला जा सकता है। हम श्री जेफ्फरी महोदय के सचमुच बड़े आभारी हैं कि उनके श्रम से हमारा ध्यान कुछ इस ओर गया और हमको उनकी शोध में कुछ अपना रूप भी दिखाई दे गया। अन्यथा गत सहस्र वर्षों में इसका अध्ययन इस देश में क्या हुआ और फलतः क्या हो रहा है?

'कुरआन' में 'दहरविद्या'

'कुरआन' में दहरविद्या पर विचार करने के पहले ही जानना यह होगा कि वास्तव में दहरविद्या है क्या। इस के विषय में महामहोपाध्याय डाक्टर गङ्गानाथ झा जी का कहना है—"सन्मार्गस्थ अधिकारी भी साधारणतः क्रमिक ही प्रकार से परमतत्त्व का सम्यक् ज्ञान सम्पादन कर सकता है। इन्हीं साधन-प्रकारों में एक है 'दहरविद्या'। इस विद्या का विवरण 'छान्दोग्योपनिषद्' के आठवें अध्याय में पाया जाता है। इस का प्रथम मन्त्र है—

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

"अथ यदिदमस्मिन् ब्रह्मपुरे दहरं पुण्डरीकं वेश्म" इत्यादि।

इस मन्त्र में एक असाधारण पद 'दहरम्' पाया गया, इसी से प्रायः इस समस्त प्रकरण का नाम साम्प्रदायिकों में 'दहर' प्रसिद्ध हुआ और इस में जिस विद्या का विवरण है, उस की संज्ञा हुई 'दहर-विद्या'।" (कल्याण-साधनाङ्क, प्रथम खण्ड, १५।१, पृ० ५६६) अस्तु, जिस असाधारण पद के कारण इस समस्त प्रकरण की संज्ञा 'दहर' हुई, उस की विवेचना भी कुछ हो ले तो ठीक। इस के सम्बन्ध में भी एक विद्वान् मनीषी का मत है—"दहर उत्तरेभ्यः" यह सूत्र साक्षात् नारायणावतार भगवान वे व्यास का रचा हुआ है, उत्तर वाक्यों की मीमांसा करने से यह 'दहर' शब्द परब्रह्म श्रीनारायण का ही बोधक है—यह सूत्र का संक्षिप्त अर्थ होता है। जिस आकाश की गवेषणा की जाती है, वह 'दहर' पद से बोधित भूताकाश नहीं हो सकता और न जीवात्मा ही हो सकता है, क्योंकि इसी प्रकरण में आगे के वाक्य इस दहराकाश को भूताकाश की उपमा देते हैं। एक ही पदार्थ उपमान और उपमेय दोनों नहीं होता।...इसलिए यह मानना पड़ेगा कि दहरा-काश प्रसिद्ध आकाश नहीं है, किन्तु परमात्मा ही है; क्योंकि वेदान्त-वाक्यों में बार-बार परमात्मा को आकाश की उपमा दी जाती है—

"आकाशवत् सर्वगतश्च गूढः।"

अथच द्युलोक और पृथिवीलोक—ये दोनों ही दहराकाश के भीतर ही रहते हैं इस कथन में भी दहराकाश परमात्मा का ही बोधन करता है, अथच निरवधिक आत्मत्व एवं अपहतपाप्मत्वादि अष्टगुण भूताकाश में न रहकर परम प्रभु नारायण को ही अपना आधार बत-लाते हैं, इसलिए भी दहराकाश से भूताकाश का बोधन नहीं हो सकता। 'दहराकाश' शब्द के जीवात्मा का बोधन करने पर सर्वलोकाधारत्व एव आकाश की उपमा तथा निरवधिक आत्मत्वादि सत्यसङ्कल्पान्त गुणगणों का आधारत्व नहीं बनेगा। जीवात्मा का स्वरूप अणु है;

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

"आराग्रमात्रो ह्यवरोऽपि दृष्टः" इस वाक्य में जीवात्मा को आराग्र (सूए की नोक) की उपमा दी गयी है। अथच 'ब्रह्मपुरे' इस पद में मुख्य वृत्ति से 'ब्रह्म' शब्द जीवात्मा का बोधक न होकर परमात्मा का ही बोधन करता है। इसलिए जीवात्मा भी 'दहराकाश' का वाच्य नहीं हो सकता, किन्तु साक्षात् परमात्मा ही 'दहराकाश' का अभिधेय है।' (वही, पृ० ४६९।७०)। 'दहरविद्या' और 'दहराकाश' की इस मीमांसा को सामने रखकर जब हम दहर-साधना पर विचार करते हैं, तब प्रकट होता है कि "इस आत्मप्राप्ति का साधन श्रुति बतलाती है कि ब्रह्मचर्य है। ब्रह्मचर्य केवल वीर्यरक्षण ही नहीं है, यद्यपि ब्रह्मचर्य का यह अत्यन्त आवश्यक और सब से प्रथम अङ्ग है। इस के बिना मनुष्य देव बनना तो दूर रहा, दैत्य भी नहीं बन सकता। परन्तु ब्रह्मचर्य इतने से ही पूरा नहीं होता; यदि होता, तो इन्द्र की सी अन्वेषण-बुद्धि और विजिज्ञासा विरोचन को भी प्राप्त हुई होती, क्योंकि वह भी तो प्रजापति के यहाँ ३२ वर्ष ब्रह्मचर्य-पालन करके ही रहा था। शरीर में उस की जो आत्मबुद्धि थी, वह इस ब्रह्मचर्य से नहीं पलटी; बल्कि प्रजापति के उपदेश को उस ने उलटा ही समझा और शरीर में उस की आत्मबुद्धि और भी दृढ़ हो गयी। तात्पर्य, ब्रह्मचर्य ब्रह्म का समग्र साधन है, जिस के यज्ञ, इष्ट, सत्त्रायण, मौन, अनाशकायन और अरण्यायन—ये छः अङ्ग है। वीर्यरक्षणरूप ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए हृद्देशस्थित आत्मा को वरण करना और तत्प्रीत्यर्थ ही सब कर्म करना 'यज्ञ' है। इस यज्ञ के द्वारा उन्हें अपना इष्ट बनाना, उन्हें पूजना और उन के भाव से भावित होना 'इष्ट' है। लोकोपकारार्थ बागबगीचे लगाना या अन्य सुभीते और सुख-साधन निर्माण करने को भी 'इष्ट' कहते हैं। सत् को ही अपना त्राता जान कर सत् का ही सङ्ग करना, सत्पुरुषों का सङ्ग करना अथवा ज्ञान-सत्रादिकों में जाकर सत्सङ्ग करना 'सत्त्रायण' है। आत्मस्वरूप का मनन करना, अन्यथा भाषण न करना और सभी वृत्तियों को इस मनन में मौन रखने का अभ्यास

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

करना 'मौन'रूप ब्रह्मचर्य है। आत्मा को ही अपना आश्रय जाकर भूख-प्यास भूल जाना, उपवास रहना अथवा स्वयं न खाकर वैश्वानर आत्मा को ही भोग लगाना 'अनाशकायन' ब्रह्मचर्य है। फिर अनिकेत होना, गृह का या जनपद का आश्रय न कर निर्जन वन में एकान्तवास करना 'अरण्यायन' ब्रह्मचर्य है। अरण्यायन के प्रसङ्ग में श्रुति ने कहा है कि 'और्ण्य' दो समुद्र हैं। यहाँ से आगे द्युलोक है; वहाँ 'ऐरंमदिय' सरोवर है, सोमसवन अश्वत्थ वृक्ष है वहीं ब्रह्मा की अपराजिता पुरी है, उस में प्रभुविनिर्मित हिरण्यमय मण्डप है। यहाँ तक सारा रास्ता ब्रह्मचर्य ही है।" (वही, पृष्ठ ४७५)।

'दहरविद्या' के विषय में डाक्टर गङ्गानाथ झा, पण्डित श्री श्रीधराचार्यजी शास्त्री तथा पण्डित श्रीलक्ष्मणनारायणजी गर्दे ने जो कुछ कहा है, उस से अपने यहाँ की दहरविद्या का कुछ परिचय अवश्य हो गया होगा! निदान अब 'कुर्आन' की दहरविद्या पर विचार करना चाहिए और देखना यह चाहिए की वस्तुतः उस का मूल क्या है। सौभाग्य की बात है कि 'कुर्आनपाक' में भी यह असाधारण शब्द विराजमान है और है केवल शब्द के रूप में ही नहीं, इस के नाम पर तो कुर्आन मजीद की एक सूरत ही टिकी है। सूरत 'अदहर' अथवा सूरत 'अल् इंसान' को कौन नहीं जानता? उसी में तो स्पष्ट कहा गया है—"निस्सन्देह हम ही ने (हर) मनुष्य का (स्त्री-पुरुष के) मिले हुए वीर्य्य से उत्पन्न किया, जिस से कि हम (उस पर शरीअत का वार डालें और) उस की (समझ-बूझ की) परीक्षा करें। अतः हम ने उस को (हर बात का) सुननेवाला-देखनेवाला (समझनेवाला) बनाया (अर्थात् उस को ज्ञान-इन्द्रिय तथा कर्म-इन्द्रिय दोनों प्रकार की शक्ति प्रदान की और जब वह युवावस्था को पहुंच गया, तब) हम ने उस को (उस का) मार्ग बता दिया (और आज्ञा कर दी कि इस पर चल। अब दो ही बातें हैं) या तो (वह हमारी शिक्षा-उपदेश—का) कृतज्ञ हो (और उस के अनुसार चले) वा कृतघ्न (और कुफ्र शिर्क में

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

फँसे। सो) हम ने काफ़िरों (तथा उद्दण्डों) के लिए तो जंजीरें और तौक और प्रचण्ड अग्नि तय्यार कर रखी है (और रहे ईमानदार और) नेक लोग, तो वे (ऐसे शरबत का) प्याला पीयेंगे, जिस में (ठण्डे बर्फ़, प्रफुल्लित करनेवाले स्वादिष्ट तथा सुन्दर) काफ़ूर की मिलौनी होगी। (जन्नत में) सोता होगा, जिससे (यह) अल्लाह के (मुख्य) बन्द (अर्थात् जन्नती) पीयेंगे (और वे सोते उन के सङ्केत पर चलेंगे। जहाँ उन का जी चाहेगा) वे उन्हें बहा ले जायँगे। (और अल्लाह की यह कृपा, दया इस कारण से होगी कि उन का विचार भी ठीक है, कर्म भी ठीक)। वह (अपनी) मन्नतों (अर्थात् मानी हुई भेटों) को पूरा करते हैं, (और वचन तथा प्रतिज्ञा के सच्चे) हैं और (कयामत के) उस (भयङ्कर) दिन से डरते हैं, जिस की बुराई (हर जगह) फैलेगी और वह कङ्गालों को और अनाथों को और कैदियों को अल्लाह के प्रेम में रखना सिखलाते हैं। (और जब वे खाना खानेवाले उनको धन्यवाद देते हैं, तब वे कहते हैं कि) हम तो (भाइयो !) तुम को बस (केवल) अल्लाह की प्रसन्नता के लिए खाना खिलाते हैं। हम तुम से (तुम्हारे किसी) धन्यवाद तथा बदले के अभिलाषी नहीं हैं। निस्स-न्देह हमें अपने पालनकर्ता से उस दिन (पूर्ण) भय है, जो (लोगों के) मुँह बिगाड़ देनेवाला (और) त्योरियाँ चढ़ा देनेवाला है (अर्थात् कमायत के दिन का हमें डर है)। हम जो कुछ करते हैं, उस दिन कृतार्थ होने के लिए करते हैं। अतः (हे रसूल ! उन को मङ्गल समाचार सुना दो कि) अल्लाह ने उस (भयङ्कर) दिन की बुराई से (अपने) उन (नेक बन्दों) को बचा लिया और (सर्वदा के लिए) उन को हँसी-खुशी और आनन्द प्रदान किया और (सत्यमार्ग पर) उन के धीरज धरने के कारण से वह उन को जन्नत (की नेआमतें प्रदान करेगा। खाने के लिए अच्छे अच्छे मेवे) और (पहनने के लिए) रेशमी वस्त्र देगा और यह आनन्द से) जन्नत के (उत्तम उत्तम) सिंहासनों पर तकिया लगाये (बैठे) होंगे। न वहाँ (गर्मी की) धूप

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

देखेंगे और न (सर्दी की) ठिर। (आनन्ददायक ऋतु होगी और बड़े आनन्द मङ्गल के साथ -जीवन व्यतीत करेंगे) और (जन्नत) के वृक्षों (का दृष्य ! क्या ही मनोहर !! उन की (ठण्ढी ठण्ढी) छाया जन्नतियों पर पड़ रही होगी और उनके (सुन्दर रङ्ग-विरङ्ग के) मेवे उनके निकट (अर्थात् इतने झुके पड़ते) होंगे (कि बैठे बैठे जितने चाहो तोड़ लो) और उन (जन्नतियों) के पास (उन के खाने के पदार्थ रखने के लिए सोने) चाँदी के बरतन और (पीने के पदार्थों के लिए) शीशे के गिलास लाये जायँगे, जो चाँदी के शीशे के (बने हुए) होंगे जिनको (जन्नत के, नौकरों ने (प्यास के) अनुमान से भरा होगा (न ज्यादा न कम) और वहाँ (अर्थात् जन्नत में) जन्नतियों को (ऐसे शरबत के) प्याले पिलाये जायँगे, जिन में मिलोनी सोंठ (के पानी) की भी होगी। (सोंठ का) जन्नत में एक सोता है, जिस का नाम 'सल्सबील' है और उन (जन्नतियों) के पास (सुन्दर रूपवान्) लड़के (उन के कामकाज के लिए) आयें-जायेंगे (और वे लड़के) सर्वदा (लड़के ही) रहेंगे। (कभी बूढ़े तथा कुरूप न होंगे। हे पैगम्बर !) यदि तुम उन को (चलते-फिरते) देखो, तो ख्याल करो कि (मानो) मोती बिखरे हुए हैं और जब तुम (जन्नत में) वहाँ (के किसी महल को) देखो, तो देखो कि (उस में किसी वस्तु की कमी नहीं है। नाना प्रकार की अपार) नेआमतें (उपस्थित) हैं। और (एक बहुत) बड़ी (सङ्गठित) बादशाही है (जहाँ हर प्रकार की सामग्री तथा सामान इकट्ठा है) और उन के (अर्थात् जन्नतियों के शरीर) पर महीन हरे रेशम के भी वस्त्र होंगे और मोटे रेशम के भी और उन्हें (विशेष प्रकार के) चाँदी (सोने) के कङ्गन भी पहनाये जायँगे और उन का पालनकर्त्ता उन्हें (अत्युत्तम तथा) पवित्र, स्वच्छ शरबत भी पिलायेगा (और खुदा उन से कहेगा कि) यह (इतना पुरस्कार तथा प्रतिफल) तुम्हारे (आज्ञापालन का) बदला है और (इस में कुछ सन्देह नहीं कि आज) तुम्हारा परिश्रम ठिकाने लगा (अर्थात् तुम्हारे

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

सत्कर्मों का फल तुम को मिला। अतः हे पैगम्बर! हम ने तुम पर (समय) पर थोड़ा थोड़ा करके कुर्आन उतारा।" (ख्वाजा हसन निज़ामी देहलवी का हिन्दी तर्जुमा और हिन्दी तफ़्सीर, सन् १६२६ ई०, दूसरी जिल्द, पृ० ८३६-७)।

जहाँ तक 'थोड़ा थोड़ा करके कुर्आन उतारा' का प्रश्न है, वहाँ तक तो बेखटके कहा जा सकता है कि प्रजापति की शिक्षा का क्रम है। प्रजापति की प्रथम शिक्षा का प्रभाव जो विरोचन पर पड़ा, वह इन्द्र पर नहीं। विरोचन उसी से सन्तुष्ट हो गया, पर इन्द्र को उस से शान्ति न मिली और उन्हें बार-बार प्रजापति के पास जाना पड़ा। बात यह है कि "देवराज इन्द्र और दैत्यराज विरोचन दोनों ही इस अपहतपाप्मा, अजर, अमर, अशोक आत्मा की खोज में इस आशा से प्रजापति के पास गये थे कि इस आत्मा को पाकर हमलोग समस्त लोक और समस्त भोग प्राप्त कर लेंगे। पर दोनों की अन्वेषणबुद्धि और जिज्ञासा में बड़ा अन्तर था। विरोचन की इच्छा भौतिक भोग और प्रभुत्व पाने की थी और आत्मा की जिज्ञासा उस भोग और प्रभुत्व के साधनरूप से थी। इन्द्र की इच्छा सत्य को, आत्मस्वरूप को जानने की थी, आत्मा वहाँ साधन नहीं, साध्य था। इसलिए प्रजापति ने जब कहा कि आँखों में यह जो पुरुष दिखायी देता है, यही आत्मा है, तब इस वाक्य का मर्म न समझकर विरोचन यह जानकर ही सन्तुष्ट हो गया कि हमारा शरीर ही तो हमारा आत्मा है, इसी का प्रभुत्व होना चाहिए, यही सब सुख प्राप्त करने का साधन है, यही अमर, अजर, अभय ब्रह्म है। उस की जिज्ञासा इतने से ही परितृप्त हो गयी। संसार में प्रायः आत्मा के विषय में ऐसी ही जिज्ञासा हुआ करती है। पर इन्द्र इतने से सन्तुष्ट नहीं हुआ। उस ने जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्ति तीनों ही अवस्थाओं में प्रजापति के यहाँ एक सौ एक वर्ष ब्रह्मचर्यपूर्वक रहकर अन्वेषण किया और यह देखा कि इन तीनों ही अवस्थाओं में हम अपने आप को जो कुछ समझते हैं, वह आत्मा

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

नहीं है। तब अन्त में गुरुप्रसाद से इन्द्र को यह बोध हुआ कि हृदेश-स्थित ईश्वर ही आत्मा है और वही अपने मायाचक्र पर इन अन्तःकरण प्राण और शरीर को चढ़ाकर चला रहा है।" (कल्याण-साधनाङ्क, वही, पृ० ४७५)।

श्रीगर्दे जी ने अति संक्षेप में जो देव और दैत्य की साधना में भेद दिखाया और इन्द्र तथा विरोचन की कामना का परिचय दिया, वह तो 'कुर्आन' के किसी भी पन्ने में देखा जा सकता है। यहाँ उस के कहने की आवश्यकता नहीं। यहाँ दिखाना तो बस इतना भर है कि उपनिषदों का यही प्रसङ्ग 'कुर्आन' का सर्वस्व है। 'कुर्आन' के 'मुहम्मद' हमारे 'इन्द्र' और 'कुर्आन' के 'अल्लाह' हमारे 'प्रजापति' तो हैं ही, हमारा 'विरोचन' भी 'कुर्आन' का 'काफिर' अथवा 'मुशरिक' ही है। 'कुर्आन' में 'मुसलिम' और 'मुशरिक' में प्रायः वही भेद पाया जाता है, जो उपनिषद् में 'देव' तथा 'असुर' में। 'कुर्आन' की इस स्थिति को भलीभाँति समझने के लिए उपनिषद् के 'ब्रह्मलोक' को भी देख लीजिये। कहते हैं—"तथा जिसे अनाशकायन (नष्ट न होना) कहा जाता है, वह भी ब्रह्मचर्य ही है, क्योंकि जिसे (साधक) ब्रह्मचर्य के द्वारा प्राप्त होता है, वह यह आत्मा नष्ट नहीं होता और जिसे अरण्यायन ऐसा कहा जाता है, वह भी ब्रह्मचर्य ही है, क्योंकि इस ब्रह्मलोक में 'अर' और 'ण्य' ये दो समुद्र हैं; यहाँ तीसरे द्युलोक में ऐरंमदीय सरोवर है, सोमसवन नाम का अश्वत्थ है, वहाँ ब्रह्मा की अपराजिता पुरी है और प्रभु का विशेष रूप से निर्माण किया हुआ सुवर्णमय मण्डप है ॥३॥ उस ब्रह्मलोक में जो लोग ब्रह्मचर्य के द्वारा इन 'अर' और 'ण्य' दोनों समुद्रों को प्राप्त करते हैं, उन्हीं को इस ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है, उन की सम्पूर्ण लोकों में यथेच्छ गति हो जाती है ॥४॥" (छान्दोग्योपनिषद्, अध्याय ८, खण्ड ५, गीताप्रेस, गोरखपुर)।

इस 'ब्रह्मलोक' से उस 'जन्नत' का कितना साम्य है, इसे कोई भी देख सकता है। किन्तु यदि इस विषय की और भी जानकारी प्राप्त

२

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

करनी हो, तो 'कौषीतकिब्राह्मणोपनिषद्' की 'पर्यङ्कविद्या' का अध्ययन करें और देखें कि इस ब्रह्मलोक के प्रजापति से उस जन्नत के अल्लाह का क्या लगाव है। देखिए—"वह इस देवयान को प्राप्तकर क्रम से अग्निलोक, वायुलोक, वरुणलोक, (आदित्यलोक), इन्द्रलोक, प्रजापतिलोक और ब्रह्मलोक में पहुँचता है। इस ब्रह्मलोक में 'आर' नामक सरोवर है, जिस के तट पर पहुँचने से इच्छा शान्त हो जाती है। यहाँ 'विजरा' नाम की नदी, 'इल्य' नाम का वृक्ष और 'सालज' नाम का संस्थान है। 'अपराजित' नाम का भवन है, जिस के द्वारपाल इन्द्र और प्रजापति हैं। 'विभु' नाम का सभामण्डप, विचक्षण सिंहासन और अमितौज पर्यङ्क है। यहाँ मानसी प्रिया अपनी प्रतिरूपा चाक्षुषी के सहयोग से वैराजग से पुष्पचयन कर माला रचती है। यहाँ अम्बा और अम्बायनी अप्सराएँ और अम्बया नदी है। यहाँ ऐसा जाननेवाला आता है। उस के स्वागत को ब्रह्मा यह जानकर झट उठ पड़ते हैं कि यह मेरे यश से इस विजरा नदी को प्राप्त हुआ है, अतः यह कभी जरा को प्राप्त न हो। उस की सेवा में पाँच सौ अप्सराएँ पहुँचती हैं। सौ के हाथ में फल, सौ के हाथ में अञ्जन, सौ के हाथ में माल्य सौ के हाथ में वास और सौ के हाथ में चूर्ण होता है। उसे वे ब्रह्म के अलङ्कार से अलङ्कृत करती हैं। वह ब्रह्म के अलङ्कार से अलङ्कृत होकर ब्रह्म को जानता हुआ ब्रह्म के पास पयान करता है। वह 'आर' सरोवर में आता है। उसे मन से पार कर जाता है। उस में समस्त पक्ष और विपक्ष के भाव निमग्न हो जाते हैं। उसे वे क्षण प्राप्त होते हैं, जिन से सारी इच्छाएँ नष्ट हो जाती हैं, वे इस से दूर भाग जाती हैं। वह विजरा नदी पर आता है। मन से ही उसे पार कर जाता है। उस के सुकृत और दुष्कृत वहीं धुल जाते हैं। उस के प्रिय ज्ञाति सुकृत और दुष्कृत को प्राप्त होते हैं। तब जैसे रथारोही रथ पर जाता हुआ घूमकर रथ के चक्र को (कौतुकवश) देखता है, वैसे ही वह रात-दिन, सुकृत-दुष्कृत आदि सब पहले के

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

द्वन्द्वों को देखता है। वह ऐसा सुकृत और दुष्कृत से मुक्त हो ब्रह्म को जानता हुआ ब्रह्म की ओर आगे बढ़ता है। वह 'इल्यवृत्त' को आता है। उस में 'ब्रह्मगन्ध' प्रवेश करती है। वह 'साल्लज संस्थान' को आता है। उस में 'ब्रह्मरस' प्रवेश करता है। वह 'अपराजित' आयतन में आता है। उस में 'ब्रह्मतेज' प्रवेश करता है। वह इन्द्र और प्रजापति द्वारपालों के पास आता है। वे इसे देखकर सटक जाते हैं। वह आता है विभु सभामण्डप में। उस में ब्रह्मयश प्रवेश करता है।" (प्रथम अध्याय ३-५)।

'कौषीतकि' में 'विचक्षण आसन्दी' और 'अमितौजस पर्यङ्क' की जो स्थिति है, वह 'कुर्आन' के पाठकों को कुछ 'अर्श-कुर्सी से भिन्न भले ही दिखाई दे, पर है वह वस्तुतः 'कुर्आन' में भी विराजमान। कोई भी विचक्षण व्यक्ति दोनों की तुलना कर तुरत कह सकता है कि अल्लाह का आलोक और कुछ नहीं, इसी ब्रह्मलोक का 'अरबी' आलोक है। उपनिषदों का ब्रह्मलोक 'कुर्आन' में कैसा जन्नत बना, इस का कुछ आभास आप को मिल गया। आप ने मोतियों की भाँति चमकते हुए लड़कों को ब्रह्मलोक में नहीं देखा तो कोई बात नहीं, परन्तु उन के अतिरिक्त ब्रह्मलोक में आप को जन्नत का क्या नहीं मिला? सभी कुछ तो यहाँ उपलब्ध है! हाँ, भेद यहाँ इतना अवश्य है कि जहाँ उपनिषदों में कोई बात समास रूप में कही गयी है, वहाँ 'कुर्आन' में व्यास रूप में, सो भी सर्वत्र नहीं और इस का भी विशेष कारण है। अरबी रसूल के सामने जो जनता थी, वह भारतीय आचार्य के सामने नहीं। वही परिस्थिति का भेद प्रधान है, नहीं तो 'कुर्आन' उपनिषदों को ही अरबी में उतार रहा है—निःसन्देह अरबों के लिए ही।

'कुर्आन' की जन्नत को स्पष्ट करने के लिए 'कौषीतकि' की 'पर्यङ्क-विद्या का जो उल्लेख किया गया है, वह स्थिति का और भी स्पष्ट करने के विचार से। आप इसे चाहे जिस रूप में देखें, किन्तु इतना तो टाँक ही लें कि 'कुर्आन' में कुछ और भी ऐसी

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.
बातें आ गयी हैं, जिन का स्रोत यहाँ उपनिषदों में ही है। विचार के लिए इसी प्रसङ्ग को लीजिये और तनिक ध्यान से देखिए तो कि वस्तुतः जन्नत का स्रोत कहाँ है। कहते हैं—"(हे रसूल ! वह दिन भी अद्भुत होगा) जिस दिन तुम (सच्चे) ईमानवाले पुरुषों और ईमानवाली स्त्रियों को देखोगे कि उनके (सुकर्मों) का प्रकाश इनके आगे (आगे) और उन के दाहिनी ओर चलता होगा। (और कृपा के फरिश्ते उन से कह रहे होंगे कि) तुम्हें आज के दिन ऐसी जन्नतों का मङ्गल-समाचार (सुनाया जाता) है, जिन के नीचे नहरें बहती हैं, । तुम उन में सर्वदा (सर्वदा) रहोगे। (वास्तव में) बड़ी सफलता (तो केवल) यही है (कि कयामत के दिन खुदा के समक्ष कोई कृतार्थ हो जाय) (और) जिस दिन मुनाफिक (अर्थात् छली-कपटी) पुरुष तथा मुनाफिक स्त्रियाँ ईमानवाले के पीछे पीछे दौड़ती होंगी और (उन से) कहती होंगी (कुछ देर) हमारे लिए ठहर जाओ, हम भी तुम्हारे प्रकाश से तनिक ज्योति प्राप्त कर लें, तो (उत्तर में) उन से कहा जायगा—तुम पीछे जाओ । और (किसी और) प्रकाश को ढूंढ़ लो। (और) फिर (इतने में) उन (दोनों) के बीच एक दीवार आड़कर दी जायगी, जिस में द्वार (भी) होगा। उस के भीतर की ओर (कृपा ही) कृपा होगी और बाहर की ओर अजाब होगा। और भीतर की ओर ईमानवाले जन्नत में आनन्द-मङ्गल कर रहे होंगे।)" (सूरत हदीद, ५७। १२-१३)।

'कुआन' के इस 'दीवार' और इस द्वार' को आप ने देख लिया, तो अब उपनिषद् के भी 'निरोध' और 'द्वार' को, देखिए और विचार कीजिये कि इस समता का रहस्य क्या है। उपनिषद् का कथन है–"फिर जिस समय वह इस शरीर से उत्क्रमण करता है, उस समय इन किरणों से ही ऊपर की ओर चढ़ता है। वह 'ॐ' ऐसा (कहकर आत्मा का ध्यान करता हुआ) ऊर्ध्वलोक अथवा अधोलोक को जाता है। वह जितनी देर में मन जाता है, उतनी ही देर में आदित्यलोक में पहुँच जाता है।

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

यह (आदित्य) निश्चय ही लोकद्वार है। यह विद्वानों के लिए ब्रह्मलोकप्राप्ति का द्वार है और अविद्वानों का निरोधस्थान है।" (छां० अ० ८, ख० ६।५)। कहने की बात नहीं कि उपनिषद् के 'विद्वान्' और अविद्वान ही 'कुरान' के 'ईमानवाले' और 'मुनाफिक' हैं। 'ब्रह्मलोक' को 'जन्नत' तथा 'आदित्य' को 'प्रकाश' मानने में किसी को अड़चन क्या ? मोमिन और मुनाफिक की कसौटी ईमान है तो विद्वान् और अविद्वान् की विद्या ! अन्यथा बात एक ही है। इस यात्रा को समाप्त करते-करते 'सेतु' भी सामने आ गया। उपनिषद् है—"इसलिए इस सेतु को तर कर पुरुष अन्धा होने पर भी अन्धा नहीं होता, विद्ध होने पर भी अविद्ध होता है, उपतापी होने पर भी अनुपतापी होता है, इसी से इस सेतु को तरकर अन्धकाररूप रात्रि भी दिन ही हो जाती है, क्योंकि यह ब्रह्मलोक सर्वदा प्रकाशस्वरूप है।" (छां० अ० ८, खं० ४।२)।

'कुरान' में 'सिरात' का स्पष्ट उल्लेख कहीं नहीं है, अतः इस प्रसङ्ग को बढ़ाने की आवश्यकता नहीं। 'कुरान' में जो कुछ 'अद्दहर्' की सूरत में कहा गया है, वह 'छान्दोग्य' की 'दहरविद्या'से कितना मिलता-जुलता है, इसको कोई भी विवेकी सहज में देख सकता है और सामान्यतः तुरत ही कह सकता है कि जब दोनों का नाम भी एक ही है, तब उन की एकता में सन्देह क्या ? निवेदन है कि यही तो सब से बड़ी कठिनाई है। कारण यह है कि अरबी में 'दह' का जो अर्थ होता है, संस्कृत में 'दहर' का वह नहीं। स्वयं 'कुरानमजीद' में 'दह' शब्द दो स्थलों पर आया है—एक तो इसी 'सूरत अद्दह' में, दूसरा 'सूरत जासियह' में। सूरत जासियह' में तो इस का जो प्रसङ्ग है, वह 'छान्दोग्य' के अनुकूल है। इस में कहा गया है कि (वास्तविकता) तथा यथार्थ पर तो यह लोग सोच-विचार नहीं करते) और कहते हैं कि हमारा जीवन (केवल) दुनिया ही का (जीवन) है। (दुनिया ही में) हम मर जाते हैं और (दुनिया ही में) हम जीवित रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri

हमें तो समय ही (एक नियत कालतक जीवित रखकर) नष्ट कर देता है और (सत्य बात यह है कि) उन्हें इन बातों का कुछ ज्ञान नहीं है। केवल अटकल से बातें बनाते हैं।" (सूरत ४५; आयत २४)। 'कुर्आन' के इस 'दहरी' पक्ष को 'छान्दोग्य' के इस कथन के साथ देखें और फिर कहें तो सही कि यहाँ भी 'छान्दोग्य' की 'दहरविद्या' की झलक है वा नहीं। 'छान्दोग्य' में कहा गया है—"उस आचार्य से यदि शिष्यगण कहें कि यदि इस ब्रह्मपुर में यह सब समाहित है तथा सम्पूर्ण भूत और समस्त कामनाएँ भी सम्यक् प्रकार से स्थित हैं, तो जिस समय यह वृद्धावस्था को प्राप्त होता अथवा नष्ट हो जाता है, उस समय क्या शेष रह जाता है?" (अ० ८, खं० १) इस प्रश्न का "अभिप्राय यह है कि घट का नाश होने पर घटस्थित दुग्ध, दही और घृतादि के नाश के समान देह का नाश होने पर भी देह के आश्रित उत्तरोत्तर कार्य पूर्व-पूर्व कारण का नाश होने के कारण नष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार नाश होने पर उपर्युक्त नाश से भिन्न और क्या रह जाता है? अर्थात् कुछ भी नहीं रहता ऐसा इस का तात्पर्य है।" (वही शाङ्करभाष्य)।

अब यदि इस प्रकरण को और भी स्पष्ट रूप से समझना हो, तो इसके आगे के असुरराज विरोचन का पक्ष लें और देखें कि उसका मत क्या है। कहते हैं—"वह जो विरोचन था शान्तचित्त से असुरों के पास पहुँचा और उनको यह आत्मविद्या सुनायी—इस लोक में आत्मा (देह) ही पूजनीय है और आत्मा ही सेवनीय है। आत्मा की ही पूजा और परिचर्या करनेवाला पुरुष इहलोक और परलोक दोनों लोकों को प्राप्त कर लेता है। इसीसे इस लोक में जो दान न देनेवाला, श्रद्धा न करनेवाला और यजन न करनेवाला पुरुष होता है, उसे शिष्टजन 'अरे ! यह तो आसुर (आसुरी स्वभाववाला) ही है, ऐसा कहते हैं। यह उपनिषद् असुरों की ही है।" (छांन्दोग्य अ० ८, खण्ड ८।४-५) इस आसुरी उपनिषद् को आप 'कुर्आन' के दहरी' में

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

देख सकते हैं और सूरत 'जासियह' में तो इसकी प्रतिध्वनि पा सकते हैं, परन्तु इस सूरत 'अद्दहर्' में इस 'दहर' का सङ्केत क्या है ? इसमें सन्देह नहीं कि इसकी व्याख्या में सभी व्याख्याकार उलझे हैं। मूल और पहली ही आयत है—"हल् आता अलल् इन्साने हीनुन मिनद् दह्रे लम् यकुन् शैयन् मजकूरन्।" इसमें जो 'दह्र' शब्द आया है, इसी के नाम पर इस सूरत का नाम 'दहर' पड़ गया है। हाँ, इस का एक दूसरा नाम 'अल इन्सान' वा 'इन्सान' भी है। इस का अर्थ है—"(इस में कुछ) सन्देह नहीं कि। (एक) समय में (हर मनुष्य पर ऐसा अवसर भी आ चुका है कि वह (उस समय) कोई वस्तु वर्णन (ही) के योग्य न था (अर्थात् अपनी सत्ता से कोसों दूर केवल गन्दे पानी की एक बूँद था।" (ख्वाजा-हसन निजामी का अनुवाद)। ख्वाजा-हसन निजामी की भाँति कतिपय अन्य टीकाकारों ने भी इस में इसी 'बूँद' का सङ्केत लिया है और अगली आयत के मेल में इसका अर्थ बैठता भी यही है। ऐसी स्थिति में 'दहर्' का अर्थ होगा क्या ? इस आयत का खड़ा अनुवाद है शाहरफीउद्दीन साहब देहली का जो है सबसे पुराना और शब्द-प्रतिशब्द भी—"तहकीक आया है ऊपर आदमी के एक वक्त जमाने में से कि न था कुछ चीज जिक्र किया गया।" इसमें तो सन्देह नहीं कि इस अनुवाद में' 'जमाने में से (मिनद् दह्रे) व्यर्थ प्रतीत होता है इसके बिना भी आयत का अर्थ सरलता से निकल आता है। तो क्या इसका कोई उपयोग नहीं ? विचार के लिए इसके बाद की दूसरी आयत लीजिये—

"इन् ना खलकनल् इन्साना मिन् नुत्फतिन अम्शा जन्
नब्तलीहे फजअलन् हो समीअन् बसीरन्॥"

शाह रफीउद्दीन साहब का इसका उल्था है—"तहकीक पैदा किया है हम आदमी को एक बूँद से याने नुत्फे मिले हुए से कि आजमाइश किया चाहते हैं हम उसको। पस किया हमने उसको सुननेवाला

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

देखनेवाला।" (नूरमुहम्मद का खाना तिजारत कुतुब, करीब जामा मसजिद, देहली, सन् १९२७ ई०)।

तहकीक'की पक्की बात तो यह है कि यहाँ इन्सान के मिट्टी से बनने की कोई बात नहीं है।'सूरत हज्ज'तथा 'सूरत मोमिन'में स्पष्ट कहा गया है कि इन्सान मिट्टी से बनाया गया। परन्तु इस 'सूरत दहर्' में उसका नाम तक नहीं। तो क्या इसका कुछ ठोस कारण भी है? हमारी समझ में यह 'तहकीक' का ही परिणाम है। सूरत हज्ज' तथा 'मोमिन' में जो कहा गया है कि इन्सान मिट्टी से बना, वह परम्परागत है। देखिए—"लोगों! यदि तुम दुबारा जीवित होने (के विषय) में सन्देह करते हो, सो (जरा अपने पैदा होने की दशा पर ध्यान दो कि सबसे पहले) हमने तुमको मिट्टी से पैदा किया। (अर्थात् मिट्टी से भोजनसामग्रियाँ बनाई और उनके खाने से तुम्हारे अन्दर खून पैदा हुआ और खून से वीर्य बना। फिर वीर्य से (जब वह स्त्री के गर्भ में गया, तो जमे हुए खून की एक बूँद बनी। फिर (उस जमे हुए खून की) बूँद से (गोश्त का एक) लोथड़ा (बना; जो कभी) पूर्ण बना हुआ (सुडौल और कभी) अधूरा बना हुआ (बेडौल होता है। उससे तुम मनुष्य बनकर पैदा हुए।) ताकि हम तुम्हारे लिए (अपनी रचना की शक्तियों को) प्रकट करें।" (सूरत हज्ज, आयत ४)। इसमें जिस भय के साक्षात्कार और जिस कयामत का आतङ्क जमाया गया है, उसको सामने रखकर 'सूरत मोमिन' के इस कथन पर ध्यान दें—"(हम वो हैं कि) हम ही ने (प्रथम) मनुष्य अर्थात् आदम) को (एक अत्यन्त) उत्तम मिट्टी से पैदा किया। (और) फिर हम (ही) ने उन (की सन्तान) को वीर्य (की एक बूँद) के द्वारा उत्पन्न किया। वीर्य की उस बूँद से) जो एक स्थान (अर्थात् माता के गर्भाशय) में स्थिर होती है और इस प्रकार उत्पन्न किया कि जब वीर्य गर्भाशय) में ठहर चुका, तो पुनः हमने उस वीर्य को बँधा हुआ रक्त बनाया (और जब बँधा हुआ खून बन गया) तो हमने उस बँधे हुए खून को (माँस

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

का एक) लोथड़ा बनाया। फिर उस लोथड़े को हड्डियाँ बनाया (और जब हड्डियाँ बन गयीं) तब हमने उन हड्डियों को मांस (का लिबास) पहना दिया (और जब शरीर का एक ढाँचा तैय्यार हो गया, तब) फिर हम (ही) ने (उस में अपनी शक्ति तथा हिकमत से जीव डालकर) उसको एक और तरह का प्राणी बना दिया (जो अपनी पहली उत्पत्ति से बिल्कुल निराला था अर्थात् पहले हड्डियों का खालीखूली बेजान, बेजबान बिल्कुल जड़ पदार्थ के समान एक ढाँचा था और जीव पड़ते ही कुछ से कुछ हो गया।) अतः (जिसकी यह शक्ति और यह शान हो, वह) अल्लाह कितना बरकतवाला (और) कितना उत्तम सृष्टिकर्त्ता है ?" (११-१४)।

मानव रचना-विधान का जो क्रम 'कुर्आन मजीद' में आया है, उस में 'मिट्टी' का प्रसङ्ग तो 'केताब' का है, पर शेष का लोगों को पता नहीं। मिट्टी से इन्सान बना और फिर खून से आगे बढ़ा, यह बहुतों को खटकता है, किन्तु यह हमारा प्रकृत विषय नहीं। हमारा कहना तो यह है कि गर्भविद्या का जो विवरण 'कुर्आन' में दिया गया है, वह उपनिषत् पर आश्रित है। देखिए 'गर्भोपनिषत्' में कहा गया है—

"परस्परं सौम्यगुणत्वात्षड्विधो रसो, रसाच्छोणितं, शोणितान्मांसं मांसान्मेदो, मेदसः स्नायवः, स्नायुभ्यो ऽस्थीन्यस्थिभ्योमज्जा, मज्जातः शुक्रं शुक्रशोणितसंयोगादावर्तते गर्भो हृदि व्यवस्थां नयति। हृदयेऽन्तराग्निः अग्निस्थाने पित्तं, पित्तस्थाने वायुः, वायुतो हृदयं प्राजापत्यात्क्रमात् ॥ २ ॥ ऋतुकाले संप्रयोगादेकरात्रोषितं कललं भवति, सप्तरात्रोषितं बुद्बुदं भवति अर्ध मासाभ्यन्तरे पिण्डो भवति, मासाभ्यन्तरे कठिनो भवति, मासद्वयेन शिरः सम्पद्यते, मासत्रयेण पादप्रदेशो भवति, अथ चतुर्थे मासे गुल्फजठरकटिप्रदेशा भवन्ति, पञ्चमे मासे पृष्ठवंशो भवति। षष्ठे मुखनासिकाक्षिश्रोत्राणि भवन्ति। सप्तमे मासे जीवेन संयुक्तो भवति, अष्टमे मासे सर्वलक्षणसम्पूर्णो भवति" ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

'गर्भोपनिषत्' की सर्वमान्यता में सन्देह हो तो 'चरकसंहिता' की साखी लें और स्पष्ट देखें कि स्थिति क्या है। लीजिये—"उस स्त्री के साथ शुद्ध शुक्रवाले पुरुष के मिलाप होने से सर्वशरीरधातु का सार शुक्रधातु हर्ष के कारण उदीरित अर्थात् बढ़कर सर्वाङ्ग से उत्पन्न होता है। इसी प्रकार हर्षवश आत्मा से उदीरित वही जीवधातु पुरुष के शरीर से निकलने के पश्चात् उसी रास्ते से गर्भाशय में अनुप्रवेशपूर्वक माता के रुधिर के साथ मिल जाता है। चेतनाधातु इस प्रकार सर्वगुण ग्रहण करके गर्भत्व को प्राप्त होता है। पहले महीने में संमूर्छित भाव में अवस्थान करता है। दूसरे महीने में घनपिण्ड के समान गोल होता है अथवा देखने में लम्बी मांसपेशी के आकार अथवा अर्बुद के आकार में गोल उठा हुआ होता है। तीसरे महीने सर्वेन्द्रिय और सर्वाङ्गावयव एक ही समय में उत्पन्न होकर चौथे महीने गर्भ दृढ़ होता है। उस समय गर्भवाली का देह भारी होता है। पञ्चम महीने में गर्भ का मांस और रुधिर पुष्ट होता है छठे महीने में गर्भ के बल, वर्ण पुष्ट होते हैं। सातवें महीने में गर्भ के समस्त भाव ही सहसा पुष्ट हो जाते हैं। अष्टम महीने में गर्भ माता से और माता गर्भ से रस बहनेवाली नाड़ियों के मार्ग से परस्पर एक के हृदय में दूसरे के हृदय में बारंबार ओज-सञ्चार करता है। नवम महीने का एक दिन भी चले जाने से प्रसव होने का समय कहा जाता है। नवम मास से दशम मासपर्यन्त प्रसव का प्रकृत अर्थात् योग्य काल है।" (शारीरस्थान चतुर्थ-अध्याय, श्रीदत्तराम नारायण चौबे की टीका)। गर्भ-विकास,क्रम का इतना बढ़ाने का एक मात्र कारण यही है कि इस के द्वारा आप प्रत्यक्ष देख सकें कि कुर्आन् मजीद' के सम्यक् अध्ययन में अरब और यूनान की भाँति ही भारत से भी कुछ जानकारी प्राप्त करना अनिवार्य है। 'अद्दहर' की दूसरी आयत को अब ध्यान से पढ़ें, तो उस का अर्थ और भी झलक उठे और आप ही आप देख लें कि उस में किस तथ्य का उद्घाटन हुआ है। इस में तो सन्देह नहीं कि

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

उस में 'गर्भ' की ही बात कही गयी है, 'रत' वा वीर्य की नहीं। इस का स्पष्ट कारण यह है कि पहली आयत में ही आ चुका है, किन्तु भारतीय विचार-धारा से अनभिज्ञता के कारण यह 'कुर्आन शब्द' के टीकाकारों पर प्रकट नहीं हो पाया है। कहने की बात नहीं कि 'कुर्आन मजीद' की इस सूरत को जानकारों ने जो 'अद्दहर्' वा 'अल् इसान' का नाम दिया है, वह कुछ सोच-समझकर ही। सूरत के विचार से 'दहर्' 'इंसान' का पर्याय कैसे हो गया, इस का आज टीकाकारों तथा कुर्आन' के मीमांसकों को पता नहीं, परन्तु 'दहरविद्या' के प्रताप से वह सहज ही प्रकट हो सकता है। सो कैसे ? तनिक इसे भी देख लें। श्रुति कहती है—

"अथ यदिदमस्मिन् ब्रह्मपुरे दहरं पुण्डरीकं वेश्म दहरोऽस्मिन्नन्तराकाशः, तस्मिन् यदन्तस्तदन्वेष्टव्यम् तद्वाव विजिज्ञासितव्यम् ॥" (छां०, अ० ८, खं १।१)।

इस के विषय में पहले भी कुछ कहा जा चुका है। यहाँ ध्यान देने की बात है कि इस 'दहर्' के सम्बन्ध में विवाद करते समय यह भी कहा गया है—

"अथवा जीवो दहर इति प्राप्तम् ब्रह्मपुरशब्दात्। जीवस्य हीदं पुरं शरीरं ब्रह्मपुरमित्युच्यते; तस्य स्वकर्मणोपार्जितत्वात्।"

एवं श्रीभास्कराचार्य इसी को और स्पष्ट करते हुए लिखते हैं—

"जीवो वा स्यात्, अन्तर्निवासित्वात्, दहरश्रुत्युपपत्तेश्च। दहरमल्पम्। आराग्रमात्रश्च जीवः। तथा हि श्रुतिः—आराग्रमात्रो ह्यवरोऽपिदृष्टः।"

तात्पर्य यह कि आचार्यों ने श्रुति के 'दहर' को 'जीव' रूप में भी समझा है और माना भी है, उस का निवास इस 'ब्रह्मपुर' के 'हृद् कमल' में है। छान्दोग्य (८।३।३) में जो कहा गया है—

"स वा एष आत्मा हृदि तस्यैतदेव निरुक्तं हृद्यमिति"

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri

उस का भी तात्पर्य यही है कि इस आत्मा का निवास हृदय में ही है और इसी से इस को हृदय कहते भी हैं। इस प्रकार 'कुर्आन' के 'दहर' और 'इंसान' के पर्याय को भी समझ सकते हैं और मान सकते हैं कि 'दह' ही 'इंसान' है। परन्तु इतने से ही 'मिनदू दहरे' की गाँठ तो नहीं खुलती। तो फिर उस आयत में इस का अर्थ क्या ? निवेदन है, ध्यान से सुनें। श्रुति कहती है—

"कस्मिन्नु रतः प्रतिष्ठितमिति हृदय इति तस्मादपि प्रतिरूपं जातमाहुर्हृदयादिव सृप्तो हृदयादिव निर्मित इति 'हृदये ह्येव रेतः प्रतिष्ठितं भवति।" बृहदारण्यक अ०, ब्रा० ६। २२)।

इस प्रकार यह तो प्रकट ही है कि 'रेत' का प्रतिष्ठान हृदय' ही है और हृदयपुण्डरीक 'दहर' का पर्याय है इसे भी हम देख ही चुके हैं। 'गर्भोपनिषत्' में जो "वायुस्थाने हृदयं प्राजापत्यक्रमात्" कहा गया है, उस की टीका में श्रीशङ्करानन्द लिखते हैं—

"अनन्तरं वायुस्थाने वायुसदृशः सन्वायुस्थाने कञ्चित्कालं स्थित्वा पितुर्योषित्पिशाचीस्मरणदर्शनादिना संक्षुब्धहृदयस्य सर्वगात्रेभ्यः श्लेष्मबहुलरेतसा सार्धं हृदयं हृदयपुण्डरीकं प्राप्नोतीति शेषः। एवं पितुर्हृदये स्थित्वा प्राजापत्यात्प्रजापतेरयं प्राजापत्यः प्रजाकामेन विधात्राऽनुष्ठितस्तस्मात्क्रमात्सञ्चरणाद्योषितोऽधोपहासादित्यर्थः" उपनिषदांसमुच्चः, आनन्दाश्रमसंस्कृतग्रन्थावलि २६)।

हमारी समझ में यही 'दहर' 'कुआ़न' की 'अद्दहर्' सूरत में भी है, जिस की पहली आयत में जो 'मिनद् दहर्' पद आया है, उसका अर्थ है 'दहर्' में से, न कि 'जमाना में से'। अल्लाह का आदेश है कि पहले इंसान रेत के रूप में 'दहर' में अप्रकट रूप से विराजमान था, फिर माता की कोख में गर्भ रूप से प्रकट हुआ। तात्पर्य यह कि पहली आयत में जीव की प्रथम दशा का वर्णन है। हृदय-पुण्डरीक में उस की अवस्था यह थी कि वह किसी उल्लेख के योग्य नहीं था। फिर परमात्मा की कृपा से स्त्री-पुरुष के संयोग से उस को रूप मिला।

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

'दह' के सम्बन्ध में अबतक जो जिज्ञासा की गयी है, उस की पूर्ति के लिए इतना और कह देना आवश्यक प्रतीत होता है कि 'दह्र' को इसलाम में भी कहीं कहीं अल्लाह का वाचक कहा गया है। फलतः वह एक महानुभाव का कहना है—"याने जमाना नाम है 'दह्र' का। वह कुछ काम करनेवाला नहीं। मगर किसी और चीज को कहते हैं जो मालूम नहीं होती और दुनिया में तसर्रुफ उस का चलता है। फिर अल्लाह ही को क्यों न कहें? ऐसे माने पर 'हदीस' में आया है कि दहर् अल्लाह है। उस को बुरा न कहिए" यह है जनाब नूरमुहम्मद साहब के संस्करण में 'सूरत जासियह' के 'दहर्' पर टिप्पणी, जो 'मूजिह अल् कुर्आन' पर है आश्रित। इस 'हदीस के प्रमाण पर हम अधिक कुछ नहां कहना चाहते। हाँ, प्रसङ्गवश इतना कह जाने में कोई क्षति भी नहीं समझते कि यदि इस 'हदीस' में कुछ सार है, तो वह हमारे 'दहर' के ही पक्ष में है। हम पहले ही देख चुके है कि हमारे आचार्यों ने 'दहर' का अर्थ कहीं 'ब्रह्म' लिया है, तो कहीं 'जीव' और कहीं 'हृदयपुण्डरीक'। अतः इस का अर्थ यदि कहीं अरब में जाकर अल्लाह का वाचक हो गया, तो और भी अच्छा हो गया, वह और भी हमारी दहरविद्या के मेल में आ गया। हम इस विषय में कुछ और निवेदन करना व्यर्थ समझते हैं और इतना ही कहकर सन्तोष करते हैं कि वेदान्त किंवा उपनिषत् में ब्रह्म और जीव में कोई ऐसा भेद नहीं कि एक ही 'दहर' समय समय पर दोनों का द्योतक न बन सके और साथ ही साथ हृदय-कमल का भी काम न कर सके। हमारी समझ में तो ठेठ में जो कवँल का प्रयोग प्रजनन के प्रसङ्ग अथवा घर की बातचीत में होता है, वह उसी हृदयपुण्डरीक से अनुप्राणित है, जिस को 'दहर' कहा गया है और जिस में रेत का अधिष्ठान माना गया है। इस प्रकार हमारा 'दहर' यदि 'कुर्आन मजीद' और 'हदीस शरीफ' में कुछ अपना करतब भी दिखा गया, तो इस में आश्चर्य क्या? 'कुरान मजीद' की इसी

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

सूरत में 'कपूर' और 'शृङ्गवेर' तो जन्नत के 'काफ़ूर' और 'जंजबील के रूप में है ही, फिर दहर् भी यदि 'दहर्' के रूप में यहाँ आ गया, तो इस में सन्देह क्या ?

एक बात और कहते हैं कि रसूल की आज्ञा से बीबी फ़ातिमा अपनी सन्तान के कल्याण के लिए व्रत रखती थी। सन्ध्या समय जब 'रोजा' खोलना चाहती थी, तब कुछ ऐसी घटना घट जाती थी कि कोई न कोई दैव का मारा भूखा सामने आ जाता था, आप उस की प्रार्थना पर ध्यान दे उसे भोजन दे देती थीं और आप भूखी ही रह जाती थीं। घर में इतनी पूंजी न थी कि स्वयं भी कुछ पारण कर लेतीं। परिणाम यह हुआ कि पेट पीठ में जा लगा, पर आपका व्रत भङ्ग न हुआ। जब रसूल को इस की सूचना मिली और आप अपनी प्रिय सन्तान के घर पहुँचे तब आप को वह उपासना में मग्न मिलीं। फिर क्या था, इसी अवसर पर जिबराल भी आ पहुँचे और उन पर वह सूरत उतरी। इतिहास चाहें जो हो, पर प्रकरण बताता है कि 'सूरत दहर' अथवा 'इंसान' का प्रसङ्ग यही है। इसी से तो वह सारा ब्रह्मचर्य भी आ गया है, जो दहरविद्या का प्राण है। कहने की बात नहीं कि यदि यह इतिहास ठीक है तो हमारी दहरविद्या 'कुर्आनमजीद' के और भी निकट हो जाती है और कोई कारण नहीं कि आज हम इस निकटता को अति दूर से क्यों देखें ? कहते हैं कि इस भावभरी भूमि को लक्ष्यकर स्वयं रसूल कहते थे कि "मुझे हिन्दुस्तान की तरफ़ से रब्बानी खुशबू आती है।" (अरब व हिन्द के तालुकात, हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, सन् १९३० ई०, पृ० ३)। आज आप इस हदीस को मानें वा न मानें, पर आप को 'दहर्' का भेद तो खोलना ही होगा और बताना ही होगा कि उसका यह लगाव 'उपनिषत्' से क्यों है। रही 'खुशबू' की बात, सो उस के कहने की आवश्यकता नहीं। भला जिस देश से रसूल का काफ़ूर (कपूर) जंजबील (सोंठ) और 'मुश्क' (कस्तूरी) जैसे सुगन्धिमय पदार्थ मिलते थे और जन्नत में

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

भी जिनकी पूरी माँग थी, उन्हीं की जन्मभूमि और उन्हीं के देश से रसूल को रब्बानी खुशबू' क्यों नहीं आती ? क्या इन का रब्ब अथवा ईश्वर से कोई सम्बन्ध नहीं ? उत्तर अध्ययन चाहता है, कोरी भावुकता नहीं ।

'अर्श' और 'आसन्दी'

'अर्श' और 'आसन्दी' पर कुछ विचार करने के पहले ही स्पष्ट कह देना होगा कि यहाँ 'अर्श' का अर्थ है 'कुर्आन मजीद' की 'अर्श-भावना' पर विचार करना और 'आसन्दी' का अर्थ है श्रुति की 'आसन्दी' को जनता के सामने खोलकर रख देना, जिस से विश्व के मनीषी और भारत के सपूत भलीभाँति देख सकें कि वस्तुतः दोनों का मूल कहाँ है अथवा किस प्रकार दोनों मूलतः एक ही पीठ के उपासक हैं। इसलाम के प्रचार की कृपा से लोग थोड़ा-बहुत तो 'अर्श और कुर्सी' से अवश्य ही परिचित हैं, किन्तु अपने अतीत से अनभिज्ञ भारत में कितने लोग हैं जो 'आसन्दी' और 'पर्यङ्क' को जानते हैं ? अभी कुछ दिन पहले की बात है कि इस देश में एक हिन्दी के सपूत इस प्रचार में लगे थे कि यहाँ 'पलङ्ग' के लिए कोई अपना शब्द नहीं । 'अपना' का अर्थ उनके यहाँ क्या होता है, इस का हमें पता नहीं, परन्तु इतना तो हम अवश्य जानते हैं कि हमारे यहाँ 'श्रुति' में कोई 'पर्यङ्कविद्या' भी है और ऐसी 'पर्यङ्कविद्या' कि उसे देखते ही इसलाम भी 'अपनी' पुकार सकता है और उस को अपनाने के लिए क्या कुछ नहीं कर सकता । किन्तु यह तो प्रसङ्ग के बाहर की बात हुई । लेखा-जोखा से तो विवेक का पेट नहीं भरता ! फिर इस की चिन्ता क्या ?

देखिए 'आसन्दी' के विषय में श्रुति है—(सः संवत्सरं ऊर्ध्वः अतिष्ठत्) वह वर्ष भर तक खड़ा, रहा, (तं देवा अब्रुवन्) उसे देवो ने कहा, (व्रात्य, किं नु तिष्ठसि इति) हे व्रती, तू क्यों खड़ा है ।। १ ।।

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

(सः अब्रवीत्) उस ने कहा, (मे आसन्दीं संभरन्तु इति) मेरे लिए बैठने की कुर्सी लाओ ॥ २ ॥ तब (तस्मै व्रात्याय आसन्दीं समभरन्) उस व्रती के लिए बैठने की चौकी ले आये ॥ ३ ॥ (तस्याः ग्रीष्मः च वसन्तः च) उस चौकी के ग्रीष्म और वसन्त ये (द्वौ पादौ आस्तां) दो पाँव थे और (शरत् च वर्षाः च द्वौ) शरत् और वर्षा ये दो पाँव थे ॥ ४ ॥ (बृहत् च रथन्तरं च) बृहत् और रथन्तर ये दो (अनूच्ये आस्तां) बाजू के फलक थे और (यज्ञायज्ञियं च वामदेव्यं च तिरश्च्ये) यज्ञायज्ञिय और वामदेव्य ये दो तिरछे फलक थे ॥ ५ ॥ (ऋचः प्राञ्चः तन्तवः) ऋग्वेद के मन्त्र लम्बाई के तन्तु थे और (यजूंषि तिर्यञ्चः) यजुर्वेद के मन्त्र तिरछे तन्तु थे ॥ ६ ॥ (वेदः आस्तरणं) वेद उस का बिछौना था और (ब्रह्म उपबर्हणं) ब्रह्म-ज्ञान उस का ओढ़ने का वस्त्र था ॥ ७ ॥ (साम आसादः) साम गदेला था और (उद्गीथः उपश्रयः) उद्गीथ तकिया था ॥ ८ ॥ (तां आसन्दीं व्रात्यः आरोहत्) इस प्रकार की ज्ञानमयी चौकी पर व्रती चढ़ा ॥ ९ ॥ (देवजनः तस्य परिष्कन्दा आसन्) देवजन उस के रक्षक हुए, (सङ्कल्पाः प्रहाय्याः) उस के सङ्कल्प उस के दूत और (विश्वानि भूतानि उपसदः) सब भूत उस के साथ बैठनेवाले थे ॥ १० ॥ (य एवं वेद) जो यह तत्त्व जानता है, (विश्वानि भूतानि उपसदः) सब भूत उस के साथ बैठनेवाले साथी-मित्र होते हैं, इस में सन्देह नहीं है।' (अथर्ववेद काण्ड १५ पर्याय-सूक्त ४)।

अथर्ववेद की इस अलौकिक 'आसन्दी' के विषय में भूलना न होगा कि वस्तुतः यह ब्रह्म की ही 'आसन्दी' है, क्योंकि 'चूलिकोपनिषद्' में स्पष्ट कहा है कि व्रात्यसूक्त में ब्रह्म का ही वर्णन किया गया है। देखिये—

"ब्रह्मचारी च व्रात्यश्च स्कम्भोऽथ पलितस्तथा।
अनड्वाँल्लोहितोच्छिष्टः पठ्यते भृगुविस्तरे ॥ ११ ॥
कालः प्राणश्च भगवान्मन्युः पुरुष एव च।

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

शर्वो भवश्च रुद्रश्च श्यावाश्वः सासुरस्तथा ॥ १२ ॥
प्रजापतिर्विराट् चैव पार्ष्णिः सलिल एव च ।
स्तूयते मन्त्रसंयुक्तैरथर्वविहितैर्विभुः ।
तं षड्विंशकमित्येके सप्तविंशं तथाऽपरे ॥ १३ ॥
पुरुषं निर्गुणं सांख्यमथर्वाणं शिरो विदुः ।
चतुर्विंशतिसख्याकमव्यक्तं व्यक्तदर्शनम् ॥ १४ ॥"

'व्रात्य' की आसन्दी की भाँति ब्रह्मचारी की आसन्दी का कहीं स्पष्ट उल्लेख तो नहीं है, पर 'ब्रह्मचारी सूक्त' में इतना कहा अवश्य गया है कि "जो (अमृत्ययोनौ) ज्ञानामृत के केन्द्रस्थान में, (गर्भः भूत्वा) गर्भरूप रहकर ब्रह्मचारी हुआ, वही (ब्रह्म) ज्ञान, (अपः) कर्म, (लोकं) जनता, (प्रजापतिं) प्रजापालक राजा और (विराजं परमेष्ठिनं) विशेष तेजस्वी परमेष्ठी परमात्मा का (जनयन्) प्रकट करता हुआ, अब (इन्द्रः भूत्वा) इन्द्रः बनकर (ह) निश्चय से (असुरान् ततर्ह) असुरों का नाश करता है", (अथर्ववेद, काण्ड ११, सूक्त ५ मन्त्र ७, श्रीपाद दामोदर सातवलेकर का अनुवाद) और 'छान्दोग्य' में तो इसी ब्रह्मचारी की महिमा में कहा गया है '(अथ) 'और (यत्× अनाशकायनम्×इति) जिस को अनाशकायन नाम यज्ञ (आचक्षते) विद्वान् लोग कहते हैं (तत्×ब्रह्मचर्यम्× एव) वह ब्रह्मचर्य ही है, (हि) क्योंकि (एष आत्मा न नश्यति) यह आत्मा नष्ट नहीं होता, (यम्) जिस आत्मा को (ब्रह्मचर्येण अनुबिन्दते) ब्रह्मचर्यरूप साधन से प्राप्त करते हैं (अथ) और (यत् अरण्यायनम् इति 'आचक्षते) जिसको अरण्यायन नाम यज्ञ कहते हैं (तत् ब्रह्मचर्यम् एव) वह ब्रह्मचर्य ही है, (ह) क्योंकि (ब्रह्मलोके) ब्रह्मप्राप्तिनिमित्त (अरः च) 'अर' अर्थात् कर्मकाण्ड (एयः च) और 'एय' अर्थात् ज्ञानकाण्डरूप (अर्णवै) दो समुद्र हैं (वै) इस में सन्देह नहीं और (इतः) यहाँ से (तृतीयस्याम् दिवि) तृतीय द्योतनात्मक स्थान में (तत) वहाँ (ऐरम् मदीयम्) कर्मकाण्डजनित

३

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

हर्षदायक (सरः) सरोवरतुल्य स्थान है, (तत्) वहाँ (सोम-सवनः) अमृत चूता हुआ मानो (अश्वत्थः) अश्वत्थ वृक्ष है (तत्) और वहाँ (अपराजिता) जिस को कोई जीत नहीं सकता ऐसी (ब्रह्मण पः) ब्रह्म की पुरी है और (प्रभुविमितम्) प्रभुनिर्मित (हिरण्यमयं) ज्योतिर्मय स्थान है, (प्रपाठक ८, खण्ड ५, प्रवाक ३; श्रीशिवशङ्कर शर्मा पदार्थ; वैदिक यन्त्रालय, अजमेर, सं० १९६२वि०)।

इस प्रभुविमित हिरण्यमय मण्डप में कहीं कोई 'आसन्दी' भी किसी ब्रह्मचारी के लिए है अथवा नहीं इस का उत्तर फिर दिया जायगा। अभी तो केवल इतना जान लें कि ब्रह्मचारी इन्द्र का महाभि-षेक तो होता है—

"अर्थात् ऐंद्रो महाभिषेकस्ते देवा अब्रुवन्त्सप्रजापतिका, अयं वै देवानामोजिष्ठो बलिष्ठः सहिष्ठः सत्तमः पारयिष्णुतम इममेवाभिषि-ञ्चामहा इति तथेति तद्वै तदिन्द्रनेव तस्मा एतामासन्दीं समभरन्नृचं नाम तस्यै बृहच्च रथन्तरंच पूर्वौ पादावकुर्वन्वैरूपं च वैराजं चापरौ शाक्वर-रैवते शीर्षण्ये; नौधसं च कालेयं चानूच्ये; ऋचः प्राचीनातानान्सामानि तिरश्चीनवायान्यजूंष्यतीकाशान्यश आस्तरणं श्रियमुपबर्हणं। तस्यै सविता च बृहस्पतिश्च पूर्वौ पादावधारयतां, वायुश्च पूषा चापरौ, मित्रा-वरुणौ शीर्षण्ये आश्विनावनूच्ये। स एतामासन्दीमारोहत्॥"

(ऐतरेयब्राह्मण, अष्टम पञ्चिका, तृतीय अध्याय, १२)। ऐतरेय ब्राह्मण, में इन्द्र के महाभिषेक में हमें जिस आसन्दी का दर्शन होता है, उस के निर्माण के विषय में कुछ विशेष नहीं कहना है। वह तो प्रायः उसी ढर्रे पर है, जिस पर अथर्ववेद के व्रात्य की आसन्दी। किन्तु जिस बात पर सहसा हमारा ध्यान टिक जाता है, वह है देव-ताओं का उसे अवधारण करना। सविता और बृहस्पति तो अगले पादों को धारण कर रहे हैं और वायु तथा पूषा पिछले पादों को। मित्र और वरुण सिरई को थामे हुए हैं तो दोनों आश्विन पाटी को अर्थात् आठ देवताओं में चार तो आसन्दी के चार पाँवों को पकड़े हुए हैं और

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

चार में दो दोनों सिरइयों तथा दो दोनों पाटियों को। इस प्रकार कुल आठ देवता इस को पकड़े हुए हैं।

उधर हम देखते हैं कि 'कुर्आनमजीद' का अर्श' भी आठ फरिश्तों द्वारा ढोया जा रहा है। कहते हैं—"वल् मलको अला अर्जायहा व यह्मेलो अरशा रब्बे का फौकहुम् । योमाएजिन् समानीयतुन ॥" (सूरत हाक्कह ६९, आयत १७) "और फरिश्ते उस के किनारों पर (आ खड़े) होंगे और तुम्हारे पालनकर्ता के अर्श को आठ फरिश्ते अपने ऊपर उठा लेंगे (ख्वाजा हसन निजामी)।" यह आयत 'ऐतरेय ब्राह्मण' के कितना अनुकूल है, यह हम नहीं कहते। कहना तो हमें यह है कि सच पूछिए तो 'आठ फरिश्तों' का रहस्य यहीं से खुलता है। 'कुर्आन मजीद' के टीकाकारों ने इस 'आठ' के रहस्य को सुलझाने की बड़ी चेष्टा की है और अन्त में हारकर प्रायः मान सा लिया है कि चार अभी उठाये हुए हैं और चार उस दिन और लग जायँगे अथवा चार उठाये रहेंगे और चार उन को छुड़ाने की प्रीतक्षा में रहेंगे। सारांश यह कि अभी तक इस का भेद न मिला कि ऐसा क्यों और कैसे होगा। परन्तु ब्राह्मण में इधर पहले से ही इस का समाधान उपलब्ध है। तो क्या यही बात 'अर्श' के विषय में भी नहीं कही जा सकती कि आठ फरिश्तों में से चार तो चारों पाँवों में लगे होंगे और शेष में से दो दोनों सिरहानों और दो दोनों पाटियों में? जो हो, हमारी दृष्टि में तो इन आठ फरिश्तों का इस से सुन्दर समाधान अभी देखने में नहीं आया, आगे की नहीं कहते। हाँ, प्रसङ्गवश यहाँ इतना और जान लें कि एक महानुभाव ने इन का उल्लेख इस प्रकार किया है कि क्रम से हजरत नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा, मोहम्मद मोस्तफा, अली, हसन और हुसैन इन के स्थानापन्न दिखलायी देंगे। (उन के विचार के लिए देखिए 'कलमि अल्लाह' निजामी प्रेस, लखनऊ, सन् १३२६ हि०)। श्री अब्दुल्लाह यूसूफ अली साहब ने 'दी होली कुर्आन' की टीका में इस की जो व्याख्या की है, वह सारगर्भित नहीं हो पायी

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

है। उन को स्वयं उस से सन्तोष नहीं हुआ है। तो भी इस में सन्देह नहीं कि यदि उनके सामने ब्राह्मण किंवा श्रुति की यह 'आसन्दी' होती और होता 'ऐतरेय ब्राह्मण' का यह महाभिषेक, तो उनका मार्ग बहुत कुछ प्रशस्त हो जाता और फलतः उन की टीका भी कुछ और ही होती। जो हो, इतना तो प्रकट ही है कि श्रुति की 'आसन्दी' के प्रताप से 'कुर्आन' का 'अर्श' बहुत कुछ स्पष्ट हो जाता है और हम उसकी स्थिति को भी बहुत कुछ यथार्थ रूप में समझ लेते हैं। इस प्रसङ्ग में 'कुर्आन मजीद' की आयत ३६-७५ और ४०-७ को विशेष रूप से देखना चाहिए और यह भी समझ रखना चाहिए कि 'कुर्आन' (११-७) में जो 'अर्श' का आधार पानी कहा गया है, उसका भी कुछ रहस्य है। सो यहाँ इतना टाँक लीजिये कि व्रात्य भी अन्त में समुद्र ही हो जाता है—"(सः महिमा सद्रुः भूत्वा) वह बड़ा समर्थ गतियुक्त होकर (पृथिव्याः अन्तं अगच्छत्) पृथ्वी के अन्त तक गया और (स समुद्र-अभवत्) वह समुद्र हुआ।" (अथर्ववेद, काण्ड १५ पर्यायसूक्त ७) और मानवधर्मशास्त्र में तो स्पष्ट कहा गया है—"आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः। ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायणः स्मृतः॥" (मनुस्मृति)।

यदि इस विषय में कुछ और भी जानना हो, तो कृपया श्रुति का अध्ययन करें और अपने आप ही प्रकट देख लें कि इस क्षेत्र में यहाँ का पक्ष क्या है। स्मरण रहे, इसके बारे में प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता मौलाना अब्दुल कलाम 'आजाद' (अहमद) लिखते हैं—"आयत (७) में फरमाया—अल्लाह की हुकूमत पानी पर नाफिज थी। दूसरी जगह फरमाया कि हमने तमाम जिन्दा अजसाम पानी से पैदा किये (३०-२१) इससे मालूम हुआ कि जमीन पर एक इब्तदाई दौर गुजर चुका है जब कि पानी था या ऐसी चीज थी जिसे पानी से तावीर किया गया है और कवानीन इलाही इस में काम कर रहे थे।" (तर्जामानुल कुरान ११-७)। मौलाना 'आजाद' ने जैसा कुछ कहा है,

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

उस के विषय में भला और क्या कहा जा सकता है। तो भी इतना तो मान ही लेना होगा कि श्रुति बताती है कि—"इस हेतु (आपः) जल (एव) ही (इमाः) ये वच्यमाण पृथिवी आदि (मूर्त्ताः) मूर्त्तिमान् है (या इयम् पृथिवी) जो यह पृथिवी (यद् अन्तरिक्षम्) जो अन्तरिक्ष (यद् द्यौः) जो यह द्युलोक (यत् पर्वताः) जो पर्वत (यद् देवमनुष्याः) जो देवमनुष्य (यत्पशवः) जो पशु (च) और (वयांसि) पक्षी (च) और (तृणवनस्पतयः) तृण और वनस्पति (श्वापदानि) क्रूरपशु (आकीटपतङ्गपिपीलिकम्) कीट, पतङ्ग और पिपीलिकापर्यन्त सकल क्षुद्रजन्तु (आप एव इमाः मूर्त्ताः) जल ही मूर्त्तिमान् ये सब है।" (छन्दोग्योपनिषद् प्रपाठक ७, खण्ड १०, प्रवाक् १ वही)।

'छान्दोग्य' के इस वचन को सामने रखकर 'कुर्आन मजीद' की इस आयत पर ध्यान तो दीजिये और देखिए तो सही कि हमारी रहस्यविद्या कहाँ से कहाँ जा रही है और विश्व की कैसी छबि बढ़ा रही है। कहते हैं—"वसेआ कुरसीयोहुस्समवाते उल् अर् जा व ला यउद्दोह हिफ़जोहुमा व होअल् अलीउल् अजीम।" (सूरत बकर २-२५५) अर्थात् "उस (के शासन) का सिंहासन (समस्त) आकाशों और पृथिवी को घेरे हुए है और पृथ्वी व आकाश की सुरक्षता उस को (बिलकुल) भार नहीं मालूम होती। वह (बड़ा) उच्च पदवाला (और) महान् है।" (हसन निजामी) ध्यान देने की बात यहाँ यह है कि इस आयत में 'अर्श' नहीं 'कुर्सी' का प्रयोग हुआ है जिसे हम ने 'पर्यङ्क'का पर्याय कहा है। सो इस का भी रहस्य समझ लेना चाहिए। 'कुर्आन' में कुर्सी का प्रयोग दो बार हुआ है—एक बार अल्लाह की कुर्सी के लिए और दूसरी बार हजरत सुलैमान की कुर्सी के लिए। कहते हैं—"व अक़द् फतन्ना सुलैमाना व अल्कैना अला कुरसीहे।" (३८-३४) अर्थात् "और हम ने (एक बार और) सुलैमान की परीक्षा ली और उन के सिंहासन पर

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

धड़ (अर्थात् पुत्र का मृतक शरीर) डाल दिया" (हसन निजामी)। 'धड़' के विषय में कहा यह जाता है कि हजरत सुलैमान की ७२ रानियाँ थीं। एक ही रात सब के पास इसलिये गये कि उन के ७२ पुत्र हों। परन्तु विचार करते समय 'इंशा अल्लाह' कहना भूल गये। परिणाम यह हुआ कि अपरिपक्व गर्भ स्खलित हुआ, सो भी एक ही रानी को। कथा कुछ भी हो पर इतना तो प्रत्यक्ष है कि यहाँ कुर्सी का प्रयोग हजरत सुलेमान के सिंहासन के लिए हुआ है, अतः स्वयं 'कुर्सी' शब्द में कोई अलौकिकता नहीं।

यदि 'अर्श' और 'कुर्सी' का कहीं एक ही आयत में प्रयोग हुआ होता, तो अवश्य ही विचार करने पर उनका रहस्य खुलता, परन्तु जब स्वयं 'कुरान पाक' में इस का कुछ प्रबन्ध नहीं, तब कोरी कल्पना की दौड़ से क्या लाभ ? तो भी हम देखते हैं कि मुसलिम मीमांसकों ने इस पर कुछ न कुछ विचार अवश्य किया है। उनमें से कुछ तो 'कुर्सी' को 'पादपीठ' मानते हैं और 'अर्श' को सिंहासन और कुछ एक दूसरे का पर्यायमात्र। हाँ, कुछ ऐसे भी हैं जो 'कुर्सी' को 'प्रज्ञा' का रूपक भर समझते हैं। जो हो, पर इतना तो निर्विवाद है कि 'कुर्सी' के मूल का अभी तक लोगों को पता नहीं। इधर हम जो उपनिषदों को छानते हैं, तो प्रकट दिखाई देता है कि यहाँ 'आसन्दी' के साथ 'पर्यङ्क' भी है। देखिए—

"स आगच्छति विभुप्रमितं तं ब्रह्मतेजः प्रविशति, स आगच्छति विचक्षणामासन्दीं बृहद्रथन्तरे सामनी पूर्वौ पादौ, श्यैतनौधसे चापरौ, वैरूपवैराजे अनूच्ये, शाक्वररैवते तिरश्ची सा प्रज्ञा, प्रज्ञया हि विपश्यति, स आगच्छति अमितौजसं पर्यङ्कं, स प्राणस्तस्य भूतं च भविष्यच्च पूर्वौ पादौ, श्रीश्चेरा चापरौ, बृहद्रथन्तरे अनूच्ये, भद्रयज्ञायज्ञीये शीर्षण्ये, ऋचश्च सामानि च प्राचीनातानानि, यजूंषि तिरश्चीनानि, सोमांशव उपस्तरणम्, उद्गीथ उपश्रीः, श्रीरुपबर्हणं तस्मिन्ब्रह्माऽऽस्ते। तमित्थंवित्पादेनैवाग्रमारोहति॥"

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

(कौषीतकि १-४)। 'व्रात्य' और 'ब्रह्मचारी' के विषय में पहले जो कुछ कहा गया है, उस को ध्यान में रखकर 'स आगच्छति' पर विचार कीजिये और प्रत्यक्ष देखिय कि 'छान्दोग्य' का 'प्रभुविमतं" ही तो यह 'विभुप्रमित' नहीं है ? है, अवश्य है। छान्दोग्य में यहीं पर छोड़ दिया गया था, 'कौषीतकि' में इस के आगे का वृत्त दिया गयाहै। विवरण की व्याख्या से क्या लाभ ? संक्षेप में इतना जान लीजिये कि यहाँ 'आसन्दी' को विचक्षणा' और 'प्रज्ञा' कहा गया है, तो 'पर्यङ्क' को 'अमितौजस' और 'प्राण'। बस इसी से जान लीजिये कि श्रुति में 'आसन्दी' और 'पर्यङ्क' में क्या और कितना भेद माना गया है। तो क्या यही भेद किसी न किसी रूप में 'कुर्आन' में भी गोचर नहीं होता ? निवेदन है—होता है। निश्चय ही श्रुति की 'आसन्दी' ही 'कुर्आन' का 'अर्श' और श्रुति का 'पर्यङ्क' ही 'कुर्आन' की कुर्सी है। सुलैमान की कुर्सी पर पिण्ड तो डाल दिया गया, पर प्राण रहता है अल्लाह की कुर्सी पर ही। और अल्लाह की कुर्सी है क्या ? समस्त ब्रह्माण्ड। यही तो 'आयतुल्कुर्सी (२-२५५ का निर्देश है। फिर उस के 'पर्यङ्क' होने में आपत्ति क्या ?

उपनिषद और कुर्आन

'कुर्आन मजीद' में 'मकनून किताब' का उल्लेख कुछ इस प्रकार का हुआ है कि उसको सुलझाने की चिन्ता अनेक टीकाकारों को हुई है, और तो और प्रसिद्ध सूफ़ी युवराज दाराशिकोह भी इसको सुलझाने में लीन हो गया है और अपने ढङ्ग पर यह दिखा भी दिया है कि वास्तव में यह 'मकनून किताब' 'उपनिषद' ही है। उसके तर्क पर विचार करने के पहले ही हमें देख यह लेना होगा कि वस्तुतः 'कुर्आन' में इस का प्रसङ्ग क्या है और क्यों इसके सम्बन्ध में उसको ऐसी

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

चिन्ता हो रही है। सो 'कुर्आन मजीद' का उक्त प्रसङ्ग है—"भला हमें बताओ तो (सही!) कि यह (मीठा) पानी जो तुम पीते हो, तो क्या उसको मेघद्वारा तुम वर्षाते हो? अथवा (उसके) वर्षानेवाले हम हैं। निस्सन्देह, उसके वर्षाने की शक्ति हम ही में है और हम ही (ऐसा कडुआ बना उसको अपनी कृपा से वर्षाते हैं)। और यदि हम चाहें, तो उसको दें (कि तुम प्यासे मर जाओ और उसका एक घूँट भी न पी सको)। अतः (हे अज्ञानो!) तुम (हमारी नेमतों की) कृतज्ञता क्यों नहीं करते? भला हमें बताओ तो (सही!) कि जो अग्नि तुम सुलगाते हो, क्या उसकी (लकड़ियों) के वृक्ष को तुम उत्पन्न करते हो? अथवा हम हैं (उस के) उत्पन्न करनेवाले)?", "(तुम क्या उस को उत्पन्न कर सकते हो? हम ही हैं उसके उत्पन्न करनेवाले)। हम ही ने उसको (दोजख की अग्नि का) स्मरण कराने और यात्रियों को आराम पहुंचाने के लिए बनाया है। अतः (हे रसूल!) तुम (तो हर समय) अपने श्रेष्ठ पालनकर्त्ता के नाम की पवित्रता वर्णन किया करो। (कि वास्तव में स्तुति-प्रशंसा के योग्य है। उसके अतिरिक्त और कोई नहीं। लोगो! यदि तुम कुर्आन को हमारा कलाम नहीं समझते) तो हम तारों के टूटने की सौगन्ध खाते हैं और (इसमें कुछ भी) सन्देह नहीं कि यदि तुम (तारों की वास्तविकता से) अभिज्ञ हो जाओ (और उनके टूटने की हिकमत को समझ लो) तो (यह बात बड़ी सुगमता से तुम्हारी बुद्धि में आ जायगी कि) यह बहुत बड़ी शपथ है (जो हमने खायी है और हम यह शपथ खाकर तुमको विश्वास दिलाते हैं कि हमारे रसूल, जो कलाम तुम को सुनाते हैं) वह एक श्रेष्ठ कुर्आन है, जो लौह-महफूज में (लिखा हुआ) है, जिसे पवित्रों (अर्थात् पवित्र और निकटवर्त्ती फरिश्तों) के अतिरिक्त कोई नहीं छू सकता।", "(और) यह संसार के पालनकर्त्ता की ओर से (संसार के पालनहारे के रसूल मुहम्मद पर) अवतीर्ण किया गया है। (नादानो!) क्या तुम इस

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

कुर्आन (की सचाई) का इन्कार करते हो और अपनी जीविका (के समान अपने ऊपर) इस (बात) को (आवश्यक तथा फर्ज नियत) करते हो कि तुम इसको (निष्प्रयोजन) झुठलाते ही रहोगे ? (अच्छा यदि तुम्हारा यह व्यवहार सत्य है और तुम्हारा कुर्आन को झुठलाना ठीक है) तो क्या जब (किसी रोगी की आत्मा शरीर से निकलकर) गले में आजावे (अर्थात् मृत्यु निकट हो) और तुम (दवा-दारू करनेवाले तथा उसके सगे और मित्र होकर) उस समय (उसकी इस दशा को अपने नेत्रों से) देखो, (तो उस की कुछ सहायता कर सकते हो ?) और इसमें कुछ भी सन्देह नहीं कि) हम तुम्हारी अपेक्षा उस (रोगी) से अधिक निकट (अर्थात् उसकी दशा के जाननेवाले होते हैं, परन्तु तुम देखते नहीं हो।" (सूरत वाकिअह–५६, आयत ६८. ८५)। व्यासरूप में कुर्आन का जो प्रकरण आपके सामने आया है वह सचमुच कृतज्ञताप्रकाश का प्रकरण है और चाहता है कि विश्व से कृतघ्नता दूर हो जाय और लोग अपने दाता की शरण में चट आकर उसके आदेश का पालन करें और व्यर्थ का छिद्र-जीवन छोड़ दें। इसी को दृढ़ करने के लिए अल्लाह को शपथ लेनी पड़ी है और स्पष्ट करना पड़ा है अपने आदेश की स्थिति को। तो फिर 'मकनून किताब' का अर्थ क्या ? प्रकट का गुप्त से सम्बन्ध क्या ?

सूर 'वाकिअह' की आयतों की जो टीका ख्वाजा हसन निजामी ने की है, उस में 'किताबे मकनून' का अर्थ दिया है 'लौहमहफ़ूज'। इस 'लौहमजफ़ूज' के बारे में जानना यह चाहिए कि वास्तवमें है क्या और क्यों दाराशिकोह 'किताबे मकनून' का अर्थ 'लौहमहफ़ूज' नहीं समझता। परन्तु ऐसा करने के पहले कुछ अन्य टीकाकारों के अर्थ से भी अभिज्ञ हो जाना चाहिए। सो सबसे पहले डाक्टर नजीर की टीका लीजिये, जो सम्मान के साथ ख्वाजा हसन निजामी की टीका में मूल के साथ बाईं ओर छपी है। कहते हैं—'कि यह (कुर्आन) बड़ी कद्र व मञ्जि-लत का कुर्आन है। (और हमारे यहाँ) एहतियात से रखी हुई किताब

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

(यानी लौह-महफूज) में (लिखा हुआ) मौजूद है (और) पाक फरिश्तों के सिवा कोई उसको हाथ नहीं लगाने पाता और उसकी नक्ल यह कुर्आन है, (जो) परवरदिगार-आलम की तरफ से (पैगम्बर, आखिरुज्जमां पर) नाजिल हुआ है। क्या तुम (लोग) इस कलाम से मुन्किर हो ?)" यह है उन पाँच आयतों का भाव जो सूरत वाकिअह में एक साथ (७७.८१) कुर्आन मजीद के सम्बन्ध में उतरी हैं। इन में भी आरम्भ की चार आयतों का ही इस विवाद में विशेष महत्त्व है। पहली आयत में कुर्आन की प्रतिष्ठा है तो दूसरी में उसका स्वरूप और तीसरी में उसकी पवित्रता है तो चौथी में उसका अवतार, बस यही इस चतुष्टय का सारांश है। इसमें भी विशेष ध्यान देने की बात है 'लौह महफूज' और फरिश्तों का ही। सो मूल में न तो 'लौह महफूज' ही का उल्लेख है और न फरिश्तों का ही। इसी से इस का ठेठ उल्था किया गया है—"लिखा छिपी किताब में। उस को वही छूते हैं जो पाक पने हैं।" अथवा "बीच किताब पोशीदा के नहीं हाथ लगाते उसको मगर पाक लोग।" इन अनुवादों के बारे में यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त है कि इनमें से पहला शाह अब्दुल कादिर साहब का है तो दूसरा शाह रफीउद्दीन साहब का। दोनों अनुवादों में अक्षर और भाव के विचार से कौन खरा है इसे कौन कहे, परन्तु इन के आधार पर इतना तो कहा ही जा सकता है कि मूलरक्षा द्वितीय में ही अधिक हुई है। शाह रफीउद्दीन साहबने तो भरसक सदा शब्दका ही अनुगमन किया है। यहाँ तक कि इस चतुष्टय की पहली आयत (७७) का अर्थ दिया है—"तहकीक यह पढ़ने की चीज है वा करामत।" सारांश यह कि मूल में कोई ऐसी बात नहीं कि उससे 'लौह महफूज' और 'फरिश्तों' का ही अर्थ लिया जाय। वस्तुतः 'फी किताबे मकनून' का सीधा अर्थ है—'गुप्त (गुह्य) ग्रन्थ में।' 'मकनून' का सम्बन्ध किसी रहस्य ग्रन्थ से है तो कोई क्षति नहीं। पर वह ग्रन्थ है कौन इसका निर्णय कौन करे ? दारा कहता है कि हो न हो इसका सङ्केत

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

उपनिषद् की ओर ही है। कारण' कि कुर्आन की पंक्तियाँ उसी के मेल में है। 'लौह महफ़ूज' मानने में उसे सब से बड़ी अड़चन यह दिखाई देती है कि आयत ७ में 'तनजील' शब्द मौजूद है। उसके शास्त्रार्थ का सार यह है—"कुरान के उक्त भाव स्तोत्र-संहिता मूसाकी पुस्तकों और सुसमाचार के निमित्त नहीं हैं। अरबीका तनजील (अवतीर्ण) शब्द यह प्रकट करता है कि उक्त आयत लौह महफ़ूज (सुरक्षित तख्ती) के सम्बन्ध में भी नहीं है और उपनिषद् गुप्त रहस्य है। असली पुस्तक यही है और कुरान मजीद कीआयतें ठीक-ठीक इसी में मिलती हैं। अतः गुप्त पुस्तक वास्तव में यही प्राचीन पुस्तक है। इसी से इस दास को अज्ञात बातों का ज्ञान हुआ है और इसी के द्वारा ये बातें भी समझ में आयी हैं जो पहले समझ में न आयी थी।" (सरस्वती मई सन् १९४५ ई०, मौ०महेशप्रसाद आलिन फाजिल का लेख)।

इस में तो तनिक भी सन्देह नहीं कि दारा शिकोह ने 'किताबे मकनून' के विषय में जो विचार व्यक्त किया है, वह उस के अध्ययन तथा अनुभव पर निर्भर है। किन्तु उस के ग्राह्य होने में सब से बड़ी अड़चन यह है कि कुर्आन में कही इस का स्पष्ट आदेश नहीं। 'जबूर', 'तौरात' और 'इञ्जील' का तो किसी को आग्रह नहीं, परन्तु 'लौह महफ़ूज' का आग्रह प्रायः सभी को है। स्वयं कुर्आन् में इस का उल्लेख है। कहते हैं—"यह कुर्आन तो उच्च पदवाली पुस्तक है, जो लौह-महफ़ूज में (सुरक्षित) है। ध्यान देने की बात है कि सूरत बुरूज—८५ की अन्तिम आयत है—'फी लौहमहफ़ूज' और सूरत 'वाकिअह' की उक्त आयत है—'फी किताबे मकनून'। निष्कर्ष यह कि दारा के पक्ष का समर्थन अत्यन्त कठिन है और टीकाकारों का इस के लिए 'लौहमहफ़ूज' की ओर झुकना साधु दिखाई देता है। किन्तु, इस में सन्देह नहीं कि दारा ने इस प्रसङ्ग में 'उपनिषद्' के विषय में जो कुछ कहा है, वह सर्वथा साधु है। दुःख तो इस बात का है कि दारा के अतिरिक्त किसी

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri

मनीषी का ध्यान इस ओर नहीं गया और किसी ने यह बताने की तनिक भी चेष्टा न की कि दारा ने किस विचार से प्रभावित हो ऐसा लिख दिया। एक बात और कुर्आन का आरम्भ में ही जो लम्बा अवतरण दिया गया हैं, उस से आप ही प्रकट हो जाता है कि अल्लाह कृतज्ञता का आदेश देता है और किसी की कृतघ्नता को सह्य नहीं समझता। और कदाचित् यही तो कारण है कि कुर्आन शरीफ में सभी धर्मग्रन्थों को महत्त्व दिया गया है और उन को भ्रष्ट कर देने के लिए उन के उपासकों को कोसा गया है। तो क्या इस न्याय से कुर्आन में 'श्रुति' के लिए कोई स्थान नहीं? दारा कहता है—है, अवश्य है। यही तो वह स्थल है जहाँ भारत के गुह्य ज्ञान अथवा रहस्यविद्या की ओर सङ्केत किया गया है, जिस के वास्तविक अधिकारी ऋषिमुनि अथवा ब्रह्मचारी ही हैं, सर्वसामान्य प्राणी नहीं। अवश्य ही दारा का अनुभव प्रशंसनीय है और उस की शोध अनुकरणीय। दारा ने 'तनजील' के द्वारा जो सिद्ध करना चाहा, इस प्रकार वह सिद्ध तो न हो पाया, पर इतना तो प्रकट हो ही गया कि कुर्आन की पंक्तियोंमें पैठने के लिए कुछ इधर का भी अध्ययन होना चाहिये। तो क्या यह सच नहीं? यहाँ भी राजनीति की भाँति दारा को मुँह की ही खानी पड़ी? निवेदन है, कदापि नहीं। अध्ययन शर्त है। कृपाकर उपनिषदोंका अध्ययन करें और फिर कहें कि वास्तव में दारा क्या कहता है, यदि समय का अभाव और पैसे की कमी हो तो केवल 'श्वेताश्वतर' का पाठ करें और देखें कि 'कुर्आन' उस के स्वर में स्वर मिलाकर कहाँ और क्या बोल रहा है, यहाँ बस इतना ही पर्याप्त है। कारण कि हम इस पर स्वतन्त्र निबन्ध लिखना चाहते हैं। तो भी जानकारी के लिए इतना जान लीजिये कि इसी उपनिषद् में स्पष्ट कहा गया है—

"यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः॥
प्रकाशन्ते महात्मनः॥" (६-२३)।

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

बस, कृपाकर 'देव' को 'अल्लाह' और 'गुरु' को 'रसूल' मान लीजिये, फिर विचार कर देखिए कि दारा की दृष्टि में 'किताबे मकनून' कहाँ और क्यों है। किताबे मकनून के प्रकरण पर विचार करने से प्रकट होता है कि 'तंजील' शब्द का प्रयोग उस के लिए नहीं हुआ है, इस का प्रयोग तो उस प्रकट पोथी के लिए हो रहा है, जो 'आँ हजरत रसूल अल्लाह' पर उतर रही है। उसी उतरी हुई किताब की पुष्टि में यह कुछ कहा जा रहा है और भाँति-भाँति से बताया जा रहा है कि 'किताबे मकनून' में जो कुछ पहले से लिखा हुआ है, अल्लाह की कृपा और जिबरील के साधन से नहीं पढ़ा जा रहा है। अन्य किताबों की भाँति उस में कुछ हेरफेर नहीं हो रहा है। फिर भी हतभाग्य अरब को तो देखो। वह तुरत उस पर विश्वास नहीं ला रहा है और फलतः अल्लाह की बड़ी से बड़ी कसम खानी पड़ती है। यहाँ तक, टूटे तारों की भी।

'दारा' की यह खोज खरी न उतरी तो कोई बात नहीं। परन्तु इस से इतना तो हुआ कि गुह्यविद्या का स्रोत हाथ लगा। श्रुति अथवा उपनिषद् के प्रति रसूल की क्या धारणा थी इस को कौन कहे और कौन कहे अरब पर भारत के प्रभाव को? किन्तु तो भी इतना तो प्रकट ही है कि दारा कुर्आन को उपनिषद् का अङ्ग समझता है और इस का प्रमाण भी स्वयं कुर्आन में पा जाता है। कुर्आन के अध्ययन में श्रुति से कितनी सहायता मिल सकती है इस पर विचार करने का अवसर नहीं मिला, पर दाराशिकोह ने उपनिषदों के अनुवाद में अपना कुछ कह दिया। उस का कहना है कि 'उपनिषद्' के अध्ययन से कुर्आन् का भाव खुलता है और उस का मर्म भी बहुत कुछ सामने आ जाता है, सो कैसे? तनिक इसे भी देख लें। कुर्आन में आया है—"यह भी सुन लो कि नेक (तथा आज्ञाकारी) मनुष्यों के कर्मपत्र इल्लीयीन में (विद्यमान) है। और तुम कुछ समझे भी कि इल्लीयीन क्या है? (यह भी) एक लिखा हुआ रजिस्टर है,

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

जिस की रक्षा के लिए (अल्लाह के) समीपवर्त्ती फ़रिश्ते मौजूद रहते हैं।" (सूरत ततफ़ीफ़—८३, आयत १८-२१)। 'इल्लीयीन' का प्रयोग उक्त आयत में कुछ इस ढब से हुआ है कि उस के सङ्केत को तुरत समझाना पड़ा है, 'इल्लीयीन' और 'लौह महफ़ूज़' की स्थिति बहुत कुछ एक सी है। दोनों अल्लाह के पास सुरक्षित हैं और दोनों की देखरेख निकटवर्ती फ़रिश्ते करते हैं, परन्तु इन में अन्तर यह दिखाई देता है कि प्रथम मानव कर्म-फल है तो द्वितीय अल्लाह का आदेश, अर्थात् दोनों में 'किया' और 'करो' का भेद है। स्मरण रहे, 'इल्लीयीन' किया का ही रजिस्टर है, 'न किया' का रजिस्टर तो 'सिज्जीन' है। कहते हैं—"निश्चित रूप से (समस्त) कुकर्मी पापियों के कर्म-पत्र सिज्जीन में (विद्यमान) है, और तुम कुछ समझे भी कि सिज्जीन क्या है? एक लिखा हुआ रजिस्टर है।" (वही ७-८)। सिज्जीन और 'इल्लीयीन' का रहस्य क्या है, इस को समझाने की चेष्टा सभी ने की है, किन्तु सच पूछिए तो अभीतक इस का भेद नहीं खुला है। यहाँ कुछ अपनी सी भी कर देखिए, उपनिषद् का पक्ष है—

'तस्य प्रियाज्ञातयः सुकृतमुपयन्त्यप्रिया दुष्कृतम्। तद्यथा रथेन भावयन्रथचक्रे पर्यवेक्षत एवमहोरात्रे पर्यवेक्षत एवं सुकृतदुष्कृते सर्वाणि च द्वन्द्वानि स एष विसुकृतो विदुष्कृतो ब्रह्म विद्वान्ब्रह्मैवाभिप्रैति। स आगच्छतील्यं वृक्षं तं ब्रह्मगन्धः प्रविशति॥' (कौषीतकि प्रथम अध्याय, ४-५) द्वन्द्वातीत' अथवा 'ब्रह्मैव भवति' की कल्पना कुर्आन को प्रिय नहीं। वहाँ तो बस पाप-पुण्य और सुकृत-दुष्कृत का प्रसार है, अस्तु, यहाँ इसी सुकृतदुष्कृत पर ध्यानदेना है। उपनिषद् में 'दुष्कृत' का विचार नहीं किया गया है, 'सुकृत' के विषय में ही कहा गया है कि वह 'इल्यवृक्ष' को प्राप्त होगा और फलतः उसे वहाँ 'ब्रह्मगन्ध' की प्राप्ति होगी। ब्रह्मगन्ध को जन्नत की चीज समझने में तो आप को भी कोई आपत्ति नहीं हो सकती ? रही 'इल्यवृक्ष' की मीमांसा, सो उस के विषय में उस के भाष्यकार श्रीशङ्करानन्द लिखते हैं—"इल्यो वृक्षः, इला

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

पृथिवी तद्रुपत्वेनेल्येति नामा तरुः ।" (आनन्दाश्रमसंस्कृतग्रन्थावलिः, ग्रन्थाङ्कः २९, उपनिषदांसमुच्चयः) । 'इल्य' का 'इला' अथवा पृथिवी से सम्बन्ध है तो इस के कर्मजन्य होने में सन्देह क्या ? निश्चय ही यह कर्म-फल का द्योतक है और यहीं से ब्रह्मलोक का राज्य है । 'इल्य वृक्ष' के इस रूप को सामने रखकर अब 'इल्लीयीन' पर ध्यान दीजिये और देखिए तो सही कि इस से उस की कुछ स्थिति स्पष्ट होती है वा नहीं । स्मरण रहे, इस के बारे में लोग भाँति- भाँति की कल्पना करते हैं और किसी प्रकार इस को समझा नहीं पाते । इस के सम्बन्ध में देववन्दी टीका में लिखा गया है—"जहाँ जन्नतियों के नाम दर्ज हैं और उन के आमाल की मिसलें मुरत्तव करके रखी जाती है और उन की अरवाह को अव्वल वहाँ ले जाकर फिर अपने-अपने ठिकाने पर पहुँचाया जाता है । और कब्र से भी उन अरवाह का एक गूना ताल्लुक कायम रखा जाता है । कहते हैं कि यह मुकाम सातवें आसमान के ऊपर है और मुकर्रबीन की अरवाह उसी जगह मुकीम रहती है ।" (वही, पृ० ६३९) । यह तो अत्यन्त खुली हुई सीधी बात है कि यदि 'इल्लीयीन' कर्मफल का रजिस्टर है और उस से साधकों के भोग्य का सम्बन्ध है तो उसे अवश्य ही 'जन्नत' के द्वार पर होना चाहिए, क्योंकि इस के बिना इस का कोई उपयोग ठीक नहीं ठहरता, प्रतिदिन के व्यवहार और सुविधा की यही बात है । 'आखिरत' में भी यही होगी । रही सातवें आसमान की चिन्ता, सो इस की भी गणना कर लीजिये । उपनिषद् है—"स एतं देवयानं पन्थानमापद्याग्निलोकमागच्छति, स वायुलोकं, स आदित्यलोकं, स वरुणलोकं स इन्द्रलोकं स प्रजापतिलोकं, स ब्रह्मलोकम् । तस्य ह वा एतस्य ब्रह्मलोकस्य आरो ह्रदो मुहूर्ता येष्टिहा विजरा नदील्यो वृक्षः ॥" (कौषीतकि १, ३) ।

अस्तु, किसी भी देवयानी (जन्नती) को क्रम से १—अग्निलोक, २—वायुलोक, ३—आदित्यलोक, ४—वरुणलोक, ५—इन्द्रलोक और ६—प्रजापतिलोकको पारकर ही, ७—ब्रह्मलोकमें पहुँचना पड़ता है, जिस

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

के 'आर ह्रद' और 'विजरा नदी' को पारकर 'इल्यवृक्ष' के दर्शन होते हैं। अर्थात् यह इल्यवृक्ष सातवें आसमान के मुखद्वार पर अवस्थित है और है यही वस्तुतः कुर्आन का 'इल्लीयीन'। इसे इब्रानी भाषा का शब्द मानना न्याय भले ही हो, पर सत्य तो इसे 'इल्य' का अरबी रूपान्तर ही समझता है। अन्यथा किसी प्रकार उस की सङ्गति नहीं बैठती। विश्वास न हो तो प्रयत्न कर देखिए, पर कृपया प्रकरण का मुँह खुला रहने दीजिये, वह आप ही आप से सब कुछ कह देगा।

लगे हाथों यही सूरत 'अदह्र' के 'दह्र' की उलझन को भी सुलझा देना चाहिए। विचार के लिए इसी उपनिषद् का यह पद्य लीजिये—

"विचक्षणादृतवो रेत आभृतं पञ्चदशात् प्रसूतात् पित्र्या पतत्।
स्तनमापुंसि कर्तर्येरयध्वं पुंसा कर्त्री मातरि मा निषिक्वः॥" (१-३)।

प्रथम पङ्क्ति का भाव किस प्रकार कुर्आन में यत्र-तत्र बिखरा पड़ा है इसे तो कोई भी उसे पढ़कर देख सकता है। निदान यहाँ द्वितीय पंक्ति के विषय पर ही ध्यान दिया जाता है। इस में भी 'स्तनमा पुंसि' और 'मातरि मा निषिक्तः' की विशेष भी मीमांसा हो रही है। हमारी समझ में 'सूरत अदह्र' का 'दह्र' इसी 'स्तनमा पुंसि' का द्योतक है। इस 'दह्र' के विषय में भूलना न होगा कि—

"यदस्य मध्ये लोहितं मांसपिण्डं यस्मिंस्तद्दहरं पौण्डरीकं कुमुदमिवानेकधा विकसितं हृदयस्य दश छिद्राणि भवन्ति येषु प्राणाः, प्रतिष्ठिताः।" (सुबालोपनिषत्, ४-१) में 'दहर' की व्याख्या की गयी है—"दग्ध्वा रमते अत्र सर्वानर्थमिति दहराख्यम्।" (सामान्य वेदान्त उपनिषदः, अड्यार, सन् १९२१ ई० पृष्ठ ४६६)। श्रीब्रह्मयोगी की इस व्याख्या को सामने रखकर अब उन की दूसरी व्याख्या 'स्तनमा पुंसि' पर विचार कीजिये। कहते हैं—"यूनि पुंस्येव विद्यमानस्तनोपलक्षितजठरप्रदेशं प्रप्यापतत्। ततः तज्जठराग्नना पच्यमानं सत् रेत आभृतं रेतोरूपेण परिणतं अभूत।" (वही, पृ० ११६)। 'जठर प्रदेश' ही

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

'दहर प्रदेश भी है। इस कापुष्ट प्रमाण है 'श्रीमद्भागवत' का यह श्लोक—

"पुलस्त्योऽजनयत्पत्न्यामगस्त्यं च हविर्भुवि ।
सोऽन्यजन्मनि दहराग्निर्विश्रवाश्च महातपाः ॥" (४,१, ३६)।

तात्पर्य यह कि संस्कृतवाङ्मय में 'दह्र' हृदय तथा जठर का पर्याय भी है और प्रायः हृदयपुण्डरीक के लिए आया भी है। माता-पिता के हृदय में रसरूप से विराजमान अव्यक्त जीव का कोई रूप नहीं होता कि उस का उल्लेख किया जाय। उस को रूप तो तब मिलता है, जब वह ऋतु पाकर दोनों के हृदय में उद्दीप्त होता और समस्त शरीर से खिंचकर शुक्र-शोणित के मिश्रीभाव से माता के गर्भाशय में रूप पकड़ता है। यहीं से वह उल्लेख के योग्य होता है। यही 'कुर्आन मजीद' के सूरत 'अदह्र' के 'दह्र' का भी अर्थ। इस की चर्चा हम ने अन्यत्र की है, अतः यहाँ केवल इतना भर और कह देना चाहते हैं कि 'कौषीतकि' में जो "ऋतुरस्यार्तवोऽस्याकाशयोनेः सभूतो भाया (भार्याये रेतः संवत्सरस्य) एतत्संवत्सरस्य तेजो भूतस्य भूतस्य भूतस्य भूतस्याऽऽत्मा" आया है, वह भी इस दृष्टि से विचारणीय है और 'दह्र' के कालवाची अर्थ के साथ है। कुर्आन में 'दह्र' का अर्थ क्या है इस का यथार्थ बोध उपनिषदों के अध्ययन से ही हो सकता है, अन्यथा नहीं। 'श्वेताश्वतर' ३, १३ में जो 'अङ्गुष्ठमात्रः पुरुषोऽन्तरात्मा सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः' कहा गया है, वही इस 'दह्र' का भी विधाता है। उस को जानने तथा उसे कुर्आन में भी पहचानने के लिए दोनों का अध्ययन करना चाहिए और एक बार श्रमकर के स्वच्छ हृदय से स्वयं देखना चाहिए कि दारा ने उपनिषदों के अनुवाद में 'किताबे मकनून' के लिए क्या कुछ और क्यों लिख दिया। आज की परिस्थिति में इधर उधर का पानी पीटने की अपेक्षा इस परम पानी के मूल स्रोत में पैठना चाहिए और स्पष्ट रूप से जान लेना चाहिए कि—

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

"यदा चर्मवदाकाशं वेष्टयिष्यन्ति मानवाः ।
तदा देवमविज्ञाय दुःखस्यान्तो भविष्यति ॥" (श्वेताश्वतर ६, २०)।

यदि मनुष्य आकाश को चमड़े की भाँति लपेट नहीं सकता तो उस परम 'देव' के जाने बिना दुःख से मुक्त भी नहीं हो सकता। अच्छा, तो इस देव के विषय में 'कुर्आन' का मत है—"(लोगों ! याद रखो) आकाशों तथा पृथ्वी का प्रकाशक अल्लाह है। (केवल समझाने के लिए) उसके (अद्वीतीय) नूर की मिसाल (ऐसी हो सकती है जैसे एक ताक है (और) उस में एक दीपक है (और वह) दीपक शीशे (की एक कन्दील) में (रखा हुआ) है (और उस कन्दील का) शीशा (क्या है (मानो एक चमकदार तारा है—(जो जग-मग जग-मग कर रहा है और) वह (दीपक) जैतून जैसे बरकतवाले वृक्ष (के तेल) से प्रज्वलित किया जाता है, जो न (केवल) पूर्वीय है और न (केवल) पश्चिमीय है (वरन् पूर्वीय भी है और पश्चिमीय भी। अर्थात् ऐसे खुले मैदान में उगता है कि सूर्य उस पर उदय भी होता है और अस्त भी और समस्त दिन उस पर धूप पड़ती है। यही कारण है कि) उसका तेल (इतना साफ होता है कि) यद्यपि आग उसको स्पर्श भी न करे, तब भी यह ज्ञात होता है कि वह अभी जल उठेगा। (और जब उसमें आग भी लग जाय, तो फिर तो प्रकाश ही प्रकाश (हो जाता) है। (संक्षिप्त यह कि) अल्लाह (के प्रकाश का उदाहरण यह है)। वह जिसको चाहता है, अपने प्रकाश से (हिदायत का) मार्ग बता देता है और (कुफ्र के अन्धकार को दूर कर देता है। इस प्रकार के (उदाहरण पवित्र-अल्लाह (केवल) लोगों के (समझाने के लिए (उनकी समझ के अनुसार) वर्णन कर देता है (अन्यथा उदाहरण और जिस का उदाहरण दिया जाय उन दोनों में बड़ा अन्तर होता है) और अल्लाह हर वस्तु (की दशा) से (अच्छी तरह) अभिज्ञ है।" (सूरत नूर २४, आयत ३) कहने की बात नहीं कि इस प्रकार दृष्टान्त द्वारा जो कुर्आन में व्यक्त किया गया है, वही श्रुति में सूत्ररूप से कह दिया गया।

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

है—"तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ॥" 'कुर्आन मजीद' का 'नूनन-अला नूर' 'भान्तमनुभाति' के अतिरिक्त और क्या है ? कहिए, दाराशिकोह का कहना कहाँ तक साधु है और कहाँ तक साधु है उसकी 'किताबे मकनून' ? प्रश्न उत्तर नहीं समाधान चाहता है और जिज्ञासा अध्ययन। स्वयं दारा ने इस आयत की व्याख्या अपनी अनूठी पुस्तक—मजमज उल बहरैन' में की है, उसे देखना चाहिए। यहाँ इतना ही अलम्।

हदीस में हिन्दी

कुर्आन पाक अल्लाह का कलाम है तो हदीस रसूल का कलाम। रसूल का प्रयोग जान-बूझ कर यह बताने के लिये किया गया है कि जैसे रसूल ईश्वरीय होता है वैसे ही उसका आचार-विचार भी दैवी माना जाता है। फलतः रसूल ने 'वही' की दशा में जो कुछ पढ़ा वह तो 'कुर्आन' हुआ और सामान्य रूप से जो कुछ कहा वह हदीस अस्तु हदीस को हम चाहें तो 'कुर्आन' के पतिपय स्थलों का भाष्य भी कह सकते हैं। कारण यह कि कुर्आन की जो बात लोगों की समझ में न आती थी अथवा जिस किसी बात पर विवाद उठता था उसका समाधान रसूल जिस रूप में करते थे वही हदीस बन जाता था। इस प्रकार हम देखते हैं कि हदीस का भी इसलाम में बड़ा महत्त्व हो जाता है। इसलाम के तारक मंत्र में जैसे अल्लाह की अनन्यता के साथ रसूल का नाम लेना अनिवार्य है वैसे ही इसलाम पर चलने के लिये हदीस का मानना अनिवार्य। सो हम देखते हैं कि यद्यपि कुर्आन में कहीं 'हिन्द' का उल्लेख नहीं तथापि रसूल न हिन्द से सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध कैसा और कितना था, इसका निर्णय तो आज नहीं हो सकता। परन्तु यह सम्बन्ध था इसको मानने में कोई बाधा भी उपस्थित नहीं होता

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

सुनिए, कतिपय हदीसों के आधार पर बहुत श्रुत पंडित अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी क्या कहते हैं। हाँ, तो उनका कहना है—

"हदीसों और तफ़सीरों में जहाँ हज़रत आदम का किस्सा है वहाँ मुताहद खायतों से यह बयान आता है कि हज़रत आदम जब आसमान की जन्नत से निकाले गए तो वह इसी ज़मीन की 'जन्नत' में जिसका नाम 'हिन्दोस्तान जन्नत नशा' है उतारे गए। सरनदीप (लङ्का) में उन्होंने पहला क़दम रक्खा जिसका निशान उसके एक पहाड़ पर मौजूद है। 'इब्न जरर' 'इब्न मवी हातिम' और 'हाकिम' में है कि हिन्दोस्तान की उस सरजमीन का नाम जिसमें हज़रत आदम उतरे 'दजनाय है। क्या यह कहा जा सकता है कि यह 'दजनाय' हिन्दी का 'दक्खिना' या 'दक्खिन' है जो हिन्दोस्तान के जनूबीं हिस्सा का मशहूर नाम है? और चूँकि अरब के मुल्क में मुताहद क़िस्म की खुशबूएँ और मसाले इसी जनूरी हिन्द से जाते थे और फिर अरबों के ज़रिया वह तमाम दुनिया में फैलते थे इसलिए उनका बयान है कि यह चीजें उन तोहफ़ों की यादगारें हैं जो हज़रत आदम अपने साथ जन्नत से लाए थे। उन तोहफ़ों में से छोहारे के सिवा दो फल यानी लेमूँ और केले हिन्दोस्तान ही में मौजूद हैं। एक और खायत में है कि अमरूद भी जन्नत ही का मेवा था जो हिन्दोस्तान में पाया जाता है।

"एक खायत में है कि जन्नत से चार दरया निकले हैं। 'नील' 'फ़रात', 'जैहूँ' और 'सैहूँ'। 'नील'तो मिस्र का दरया है जिस पर मिश्र की खेती जरामत का दारमदार है। इसी तरह 'फ़रात' को जो अहमियत इराक़ की सरसब्ज़ी व शादाबी के लिए है वह ज़ाहिर है। जैहूँ तुर्किस्तान का दरया है और तुर्किस्तान के लिये उसकी वही हैसियत है जो नील व फ़रात की मिस्र व इराक़ में है। और सैहूँ के मुताल्लिक़ है कि हिन्दोस्तान के दरया का वाम है। 'क्या जन्नत के इस चौथे दरया को 'गंगा' समझा जाय? बाज लोगों ने इसको दरयाय सिन्ध क़रार दिया है।" ('अरब व हिन्द का तालुकात' पृ० २-३)।

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

अस्तु, अल्लामा सैयद सुलैमान साहब ने पुरानी रवायतों के आधार पर इतना तो दिखाई ही दिया कि अरब-प्रवृत्ति आज से नहीं, सदा से इस देश को 'जन्नत नशाँ' अथवा स्वर्गतुल्य मानती आ रही है। बाबा आदम के यहाँ आने का उल्लेख अमीर खुसरो ने बड़े ढंग से किया है और स्पष्ट कहा कि यदि हिन्दोस्तान बहिश्त न होता तो बाबा आदम बहिश्त से निकाले जाने पर यहाँ क्यों आते और क्यों मोर यहीं पाया जाता? किन्तु, यह तो बाबा आदम की बात हुई। आज इससे क्या सरता है। आज तो हदीस की चर्चा हो रही है। दन्त कथा से क्या लेना? निवेदन है, इसमें भी कुछ सार है। कुर्आन शरीफ़ में भी तो जन्नत के प्रसङ्ग में ही 'काफ़ूर' और 'मुश्क' का नाम आता है? फिर अरब के इस भीतरी हिन्दी-प्रवाह को क्यों कर रोका जा सकता है? अच्छा, तो वही अल्लामा सैयद सुलैमान नदवी साहब फिर कहते हैं—

"मीर आज़ाद बिल्ग्रामी ने सिजदतुल मरजान फ़ी आसार हिन्दोस्तान' में कई सफ़हे हिन्दोस्तान के इन फ़ज़ायल के बयान के नज़र किए हैं, और उसमें यहाँ तक कहा है कि जब आदम सब से पहले हिन्दोस्तान उतरे और यहाँ उन पर वही आई तो यह समझना चाहिए कि यही वह मुल्क है जहाँ खुदा की पहली वही नाज़िल हुई, और चूंकि नूरमोहम्मदी हज़रत आदम की पेशानी में अमानत था इससे यह साबित होता है कि मोहम्मद रसूल अल्लाह सलअम का इब्तदाई ज़हूर इसी सर ज़मीन में हुआ। इसी लिये आप ने फ़रमाया कि 'मुझे हिन्दोस्तान की तरफ़ से रब्बानी खुशबू आती है।" यह तमाम रवायतें फ़न्ने हदीस के लेहाज़ से बहुत कम दरजा हैं। ताहम इनसे इतना साबित होता है कि यह जो आम तौर से समझा जाता है कि मुसलमानों का ताल्लुक हिन्दोस्तान से महमूद ग़ज़नवी के फ़तूहात के सिलसिला में हुआ और वह उसके बाद यहाँ आकर आबाद हुए, यह किस क़दर ग़लत है।" (अरब व हिन्द के तालुक़ात, पृ० ३)

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

'हिन्दोस्तान की तरफ़ से रुहानी खुशबू आती है' की हदीस के आचार्य भले ही ठीक न समझें परन्तु इतना तो उनको भी मानना ही होगा कि कुर्आन मजीद में जो जन्नत की 'खुशबू' का उल्लेख है उसमें हिन्द का भी हाथ अवश्य है और दाराशिकोह की दृष्टि में तो कुर्आन की 'किताबे मकनून' का संकेत है हिन्द की गुह्य विद्या अथवा उपनिषद् । यहाँ हम नूरमोहम्मदी के विषय में इतना और कह देना चाहते हैं कि सृष्टि की आदि में नूर का होना अथवा अल्लाह का 'नूर' से सृष्टि करना उपनिषद् को भी मान्य है । देखिए—

'सत्त्वेव सोम्येदमग्र आसीदेकमेवाद्वितीयम् । तदैक्षत बहुस्यां प्रजायेयेति । तत्तेजोऽसृजत । तत्तेज ऐक्षत बहुस्यां प्रजायेयेति । तदयोऽसृजत ।' (छांन्दोग्य, ६-२-२-३)

'सत्त्व' से 'ते' और 'ते' से 'जल' और जल से मानव-सृष्टि किस प्रकार हुई इसे आप कहीं भी इसलाम में देख सकते हैं और मान सकते हैं कि इस हदीस का भाव कितना सटीक है । किन्तु, नहीं । किसी हदीस के विषय में विशेष आग्रह ठीक नहीं, उसकी सब से बड़ी कसौटी तो यह है कि वह 'कुर्आन' के अनुकूल हो । सो इस हदीस में उसकी प्रतिकूलता तो दिखाई नहीं देती । जो हो, इस हदीस पर हिन्दी मुसलमानों को विशेष ध्यान देना चाहिए और एक बार स्वयं भी सभा हदीसों को हदीस की वर्तमान कसौटी पर ही सही कस लेना चादिए सौर यह बराबर ध्यान रखना चाहिए कि वस्तुतः हिन्द अरब का पड़ोसी देश है और मक्का व्यापार का केन्द्र । स्वयं रसूल का रसूलता से पहले व्यापार से क्या सम्बन्ध था, इसे कौन नहीं जानता ? व्यापार तो उनके कुल का मुख्य धन्धा हो रहा था और व्यापार के साथ विचारों का व्यापार कैसा चलता है, इसे कोई भी व्यक्ति कहीं भी देख सकता है, जो हो रसूल का हिन्द के विषय में कभी भी कुछ भी नहीं कहना समझ के बाहर है । कहा तो यहाँ तक जाता है कि उनके समय में एक हिन्दी राजा मुसलमान हो

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

गया था। जो हो हदीस के प्रकरण में हिन्द की उपेक्षा नहीं हो सकती। सो भी उस दशा में जब कुर्आन का उससे मेल खाता हो।

कुछ अन्य बातों पर विचार करने के पहले यहाँ इतना और टाँक लें कि—"अरबों और हिन्दुओं के दरमियान तालुक़ात का एक और ज़रीया भी था। इसकी सूरत यह थी कि शाहंशाह ईरान का कब्ज़ा बिलोचिस्तान और सिन्ध पर अक्सर रहा। इस कब्ज़ा के ताल्लुक से सिन्ध के बाज जंगजू कबीलों के फ़ौजी दस्ते ईरानी फ़ौज में दाखिल थे। इन जंगजू क़बीलों में से दो का जिक्र अरबों ने किया है। और वह जाट (ज़त) और मेड हैं। यह दोनों सिन्ध की मशहूर क़ौमें थीं। एक हदीस में है कि अब्दुल्ला बिन मसऊद सहाबी ने इआँ हज़रत सलकम के साथ एक ख़ास शकल व सूरत के लोगों को देखा था जिनकी निस्वत उन्होंने यह बताया कि 'उनका चेहरा जाटों की तरह था।' इससे मालूम होगा कि अहल अरब छठी सदी ईसवी में भी जाटों से वाकिफ़ थे" (अरब व हिन्द के तालुकात, पृ० ११]

अल्लामा सैयद सुलैमान साहब ने इससे जो निष्कर्ष निकाला है वह एकांगी अथवा अधूरा रह गया है। यहाँ विशेषता यह है कि अब्दुल्ला बिन मसद्दद स्वयं उन्हें जाट नहीं कहते। उनकी दृष्टि में तो 'उनका चेहरा जाटों की तरह था।' तो वे वास्तव में थे कौन? और गए भी थे क्यों रसूल के पास जो उक्त सज्जन को रसूल के साथ दिखाई दे गए? क्या उनके हिन्दी होने में सन्देह है? एक बात और 'सैयद साहब ने जाटों को 'जंगजू कबीला' कहा है परन्तु विचार करने पर यहाँ भी उनका कुछ और ही रूप दिखाई देता है, क़ाज़ी अब्दुस्समद 'सारम' साहब लिखते हैं—

"हज़रत आयशा रज़ा अल्लाह मनहा जब बीमार हुईं तो उनके इलाज के लिये उनके भतीजे एक जाटतबीब को लाए। (अदबुल मुफ़रद इमामबुखारी)।" (तारीख़-अल्-हदीस जैदबरकी प्रेस, बल्लीमारा देहली, सन १३५४ हि०, पृ० ७६)

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

इससे तो आप ही प्रकट हो जाता है कि जाट केवल लड़ते ही नहीं थे अपितु वैद्यक का कार्य भी करते थे, जाटों के सम्बन्ध में यह भी कहा गया है कि—

"अजरत अली ने जंग जमल (सन् ६५६ ई०) में खजाना की हिफ़ाज़त पर जाटों को मुतैयियीन किया था।'(तबरानी)" और

"अमीर मुआविया (६६१-८०५) ने जाटों को शाम के साहली शहरों में आवाद किया। (बलाजुरी)।" तारीख़-अल्-हदीस पृ०७६)

जाटों के सम्बन्ध में अभी जो कुछ कहा गया है वह यों ही टाल देने का नहीं है। उससे आप ही प्रतीत हो जाता है कि इसलाम के आविर्भाव के समय उनका अरब से क्या नाता था और किस प्रकार वे रसूल के घर से लेकर रणभूमि तक छाए हुए थे। तो भी इसकी विशेष जानकारी के लिए इतना और भी जान लें कि—

"वकौल उनके (मौलवी अब्दुलरज साहब) इराक के अरबों में अजम, तुर्क, अरब और हिन्दियों का मेल है कि अमीर मुआविया ने तीस हज़ार ज़ाटों को हिन्दोस्तान से लाकर इराक़ में आवाद किया था। और भिंडी और तरबूज़ (हिन्दवाना) इन्हीं जाटों ने यहाँ जारी किया। नीज़ अब्बासियों के ज़माना में हजार हा जाट बुलाए गए और आबाद किए गए। और उन लोगों ने एक ज़माने में बाइस अपनी कसरत और जंगलों में महफूज़ रहने के बगावत भी की थी और मुद्दत में फ़रो हुई। मुझको बहुत सी अरब औरतों को देखकर ताज्जुब होता था इनकी शकल जाटिनों से कैसी मिलती थी। अगर कोई न बताता तो हरम का ज़मीन में यह मालूम होता कि जाटिनियाँ अपने बच्चों को लेकर आ गई हैं। मगर मौलवी अब्दुल रब साहब की ज़बानी मालूम हुआ कि जाट वाक़ई यहाँ आबाद हैं, और 'बिन्दी बाबा' वाली मसल इन्हीं से मुताल्लिक़ है कि वह सबसे अलहदा आकर झोंपड़ियों में रहते थे और अरबों से न मिलते थे। भिंडी को यहाँ अब भी बिन्दी कहते हैं।" (रोज़नामचा सियाहत, १९१२ ई०, पृ० १२०,)

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

ख्वाजा गुलामुस्सकलैन साहब ने जो आप देखी आपके साम्ने रख दी है उसमें झोपड़ी के बिन्दी बाबा भी आप को दिखाई दे रहे हैं जो एकान्त में वही भाव-भजन कर रहे हैं जो यहाँ के बाबा लोग किया करते हैं। निदान हम इस प्रकार देखते यह हैं कि हमारे जाट रसूल के समय से लेकर आज तक अरबों में अपनी मान बनाए हुए हैं और किसी न किसी रूप में इतिहास को खोई हुई कड़ी को हमारे हाथ में दे रहे हैं। परन्तु हमी हैं ऐसे अभागे कि फूटी आँख से भी इधर नहीं देख रहे हैं और जो मुसलिम भाई इसे देख रहे हैं वे कभी की अपनी हिन्द आँख खो चुके हैं। फिर देखें तो क्या देखें और कहें तो क्या कहें? उन्हें कुछ फरियाता भी तो नहीं?

'हदीस' और मुसलिम विद्वानों के मुँह से जाटों के विषय में कभी कभी जों कुछ आपने सुना है उसी को तनिक खोलकर अपने ढङ्ग से देखें तो पता चला कि यह 'जाट' तीन तीन रूपों में हमारे सामने आता है—१ संग्राम, २ साधना और ३ चिकित्सा, इनमें से संग्राम के सम्बन्ध में तो केवल इतना ही कहना है कि जाट सदा से इसके लिये ख्यात रहा है और 'दारयबउश' के समय से लेकर इसलाम के उदय लगभग सहस्र वर्ष तक बराबर ईरान की ओर से ग्रीक तथा रोम से मोरचा लेता रहा है। हिन्द ने ईरान के लिये कब क्या किया इसमें यहाँ कोई लाभ नहीं प्रसंग तो बस इतना जान भर लेने का है कि सासानी शासन में यह सम्बन्ध फिर से दृढ़ हुआ और उदार अनूशरेवाँ के समय (५३१-५७९ ई०) इतना पुष्ट हुआ कि भारत से अनेक पंडित उसके दरबार में जा जमे। इसलाम के उदय में जो जाट दिखाई देते हैं और उन्हें जो इसलाम में महत्त्व मिलता है उसका कारण भी यही सम्पर्क है। इस सम्पर्क के विषय में यहाँ इतना निवेदन कर देना अनुचित न होगा कि कुर्आन मजीद में जो 'सिरबाल' शब्द आया है वह शिरस्त्राण (शिरपाल) का द्योतक हो सकता है और आगे चलकर 'अँगरखा' (अंगरक्षक) का वाचक भी, 'शिरपाल'

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

का 'सिरबाल' बनना कितना सरल है, इसके कहने की आवश्यकता नहीं अरबी में 'प' का अभाव है। ऐसी धारणा का एक मुख्य कारण यह भी हैं कि अरब 'हिन्दी' तलवार और 'हिन्दी' भालेके महत्त्व को खूब जानते थे और रणभूमि में उसकी डींग भी मारते थे। तो कोई कारण नहीं कि 'हिन्दी' 'सिरबाल' (शिरस्त्राण) भी उनके पास क्यों न हो। कुर्आन में 'सिरबाल' के प्रयोग के लिए देखिए १४-५० और १६-८१ नहीं, संग्राम-सम्बन्ध के विचार से इसे हिन्दी ही मानना होगा।

हाँ, जाट चिकित्सक की बात अवश्य आपको अजीब लगी होगी। श्रीमती आवशा, रसूल की परम पत्नी आयशा की चिकित्सा और हो वह एक जाट के द्वारा नहीं, यह सम्भव नहीं। अजी! किस दुनिया की बात कर रहे हो! अरे! यह वह समय है जब यूनान भी यहाँ से कुछ सीखता था और हिन्दी वैद्य भी घर से जड़ी-बूटी लेकर निकलता और विश्व के मानव तथा पशु की चिकित्सा करता था। अरे! क्या आप सचमुच भूल गए कि धर्मविजयी प्रियदर्शी अशोक ने क्या व्रत ठान लिया था? अच्छा, तो लो। उसकी गिरनार पर्वत की स्तम्भ लिपि देखो। उसमें लिखा है।

"अंतियोंको योन-राजा ये वा पि तस अंतियोकस अंतियोकस सामीया राजाञो सर्वतंत्र देवानंपिय पिंयदसिनो राञो द्वे चिकीछाकता मनुस-चिकीछा च पसु-चिकीछा च। ओ सुढानि च यानि मनुसोपगानि च पसोपगानि च यत यत नास्ति सर्वत्र हारापितानि च रोपितानि च। मूलानि च फलानि च यत यत नास्ति सर्वत हारा पितानि च रोपितानि च॥"

तात्पर्य यह कि अशोक ने परोपकार का जो मार्ग दिखाया वह बराबर किसी न किसी रूप में चालू रहा और अब्बासी शासन तक विदेश में बना रहा। मनुष्य की तो क्या? पशु की चिकित्सा भी यहाँ के वैद्य घूम घूमकर करते और जगह जगह जड़ी-बूटी,

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

फलफूल लगाते फिरते थे। निदान इसी का परिणाम था कि उक्त जाट श्रीमती आयशा के पास पहुंचा।

अब रही 'बिन्दी बाबा' की साधना तथा जाट जैसे लोगों का रसूल के पास होने की बात। सो इस विषय में इसके अतिरिक्त और क्या कहा जाय कि स्वयं 'रसूल' भी रसूल बनने के पहले इस मार्ग के पथिक थे और 'हिन्दी' पहाड़ो की एकान्त गुहा 'हिरा' में जाकर घंटों नहीं दिनों कठोर साधन करते थे, और और तो और, वहीं, उनको 'पढ़' की देववाणी भी सुन पड़ी। अर्थात् उसी एकान्त गुहा में उन पर 'वही' उतरी और वे एक साधारण अरब से अरबी रसूल बन गए। फिर तो अल्लाह की उन पर ऐसी कृपा हुई कि क्या कभी फिर किसी पर होगी। आज विश्व के किसी कोने में भी अल्लाह के पाक नाम के साथ दिन में ५ बार उनका भी पाक नाम सुन सकते हैं और उनके जन्मदेश मक्का में कहीं के भी मुसलिम मानव का दर्शन कर सकते हैं। निश्चय ही यह है जबल हिन्दी' (हिन्दी पहाड़ी) की हिरा-गुहा के तप का प्रसाद। अच्छा तो जबल हिन्दी' में हिन्दी' का अर्थ ? अरबी में 'हिरा' का अर्थ कुछ भी हो परन्तु हमारी दृष्टि में तो वह 'हीरा' है जहाँ मुहम्मद सा लाल तप कर अल्लाह का अन्तिम रसूल बना। बस इससे अधिक इस प्रसंग में और क्या क्या कहा जाय एक बार कुआन तथा हदीस को इस दृष्टि से भी देखने की आवश्यकता है न ?

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project

Digitized by eGangotri.

कुछ नई प्रकाशित पुस्तकें

१. सफल जीवन—श्री छविनाथ पांडेय,
बी० ए० एल०-एल० बी० १॥)
२. विश्व की कहानी—श्री भारतीय एम० ए० १॥)
३. घनानन्द कवित्त—श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र एम० ए० २)
४. सूरदास—आचार्य रामचन्द्र शुक्ल २)
५. आधुनिक काव्य धारा—डा० केशरी नारायण शुक्ल
एम० ए० ३॥)
६. हिन्दी उपन्यास—श्री शिवनारायन श्रीवास्तव एम० ए० ४)
७. गहरि गहरि नदिया गहरानी—इन्द्र शंकर मिश्र एम० ए० १)
८. पत्थर की देवी—कुँवर कृष्ण कुमार सिंह २)
९. नूरजहाँ (महाकाव्य)—गुरुभक्त सिंह 'भक्त' २)
१०. वनश्री—गुरुभक्त सिंह 'भक्त' १)
११. प्राचीन नवीन काव्यधारा—सूर्यबली सिंह १।)
१२. चिन्तामणि (दूसराभाग) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
एम० ए० १॥)
१३. जौहर (महाकाव्य)—श्री श्याम नारायण पांडेय ४)
१४. राष्ट्रभाषापर विचार—श्रीचन्द्रबली पांण्डे एम० ए० १॥)
१५. सूफीमत " " ३)
१६. बापू और भारत—कमलापति त्रिपाठी शास्त्री ४॥)
१७. बापू और मानवता " ४॥)

पुस्तक मिलने का पता—

सरस्वती मन्दिर, जतनबर, बनारस।

CC-0. In Public Domain. The eGangotri Urdu Project